نحمدہٗ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم

افضل الذکر لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ

इन्सानी पैदाइश और उसके असरार

(कुर्आन, सायंस और तसव्वुफ)

मुसन्निफः ख़ाकपाए पीर फ़हमी ख़्वाजा शैख़ मोहम्मद फ़ारूक़ शाह क़ादरी

अल चिश्ती इफ़्तेख़ारी **मारूफ़ पीर** अफ़ी अनहो

نحمده ونصلي على رسوله الكريم

افضل الذكر لا اله الا الله محمد رسول الله

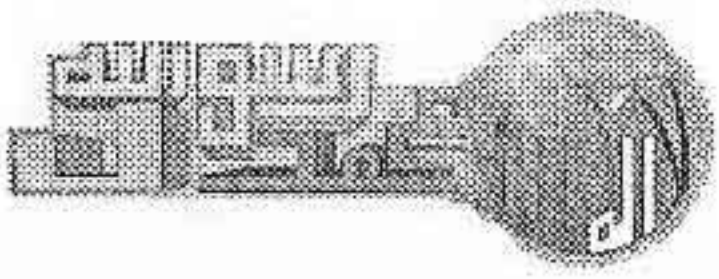

इन्सानी पैदाइश

और उसके असरार

(कुर्आन, सायंस और तसव्वुफ)

मुसन्निफ : खाकपाए पीर फहमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारूक शाह कादरी

अल चिश्ती इफ्तेखारी **मारूफ पीर** अफी अनहो

मिन जुमला हुक़ूक़ बहक़्क़े मुसन्निफ महफ़ूज़ हैं

अरकान

किताब का नाम	:	इन्सानी पैदाइश और उसके असरार
मुसन्निफ	:	ख़्वाजा शेख़ मोहम्मद फारूक शाह कादरी अल-चिश्ती इफ्तेख़ारी मारूफ पीर
नौइते इशाअत	:	बारे अव्वल
तादादे इशाअत	:	600
मुकामे इशाअत	:	बमौकए उर्स मुबारक हज़रत पीर आदिल बीजापूरी र.अ.
तारीख़े इशाअत	:	10 मार्च 2010. बमुताबिक 23 रबिउल-आदिल 1431 हिजरी
कम्प्युटर कम्पोजिंग	:	डिसेंट क्रिएशन्स - 9773039800.
कीमते किताब	:	50 रूपये

किताब मिलने के पते

- हज़रत पीर फहमी, ख़ानकाहे कादरी अल-चिश्ती आदिल फहमी नवाज़ी, आदिल नगर, आकाशवानी, गेट नं.7, मालवनी कॉलनी, मलाड (वेस्ट), मुम्बई - 95
- अफसर शाह कादरी, भगत सिंग नगर नं.1, लिंक रोड, गोरेगांव (वेस्ट), मुम्बई - 104
- अब्दुल्लाह शाह कादरी, ग़रीब नवाज़ नगर, कोकरी आगार, एस.एम. रोड, ॲन्टॉप हिल, मुम्बई - 37
- शेख़ शाहीन शाह कादरी, हाउस नं. 9-8-109/अ/76, गोल कुंडा, सॉलेह नगर, कंचा, हैदराबाद
- मोहम्मद मौला शाह कादरी, B-2/10/2, सेक्टर नं.15, वाशी, नई मुम्बई - 703
- साजिद शाह कादरी, हव्वा बी की चाल, ईदगाह मैदान, जोगेश्वरी (ई), मुम्बई .95

फ़ेहरिस्त

नं.	मज़मून	सफहा	नं.	मज़मून	सफहा
1	इन्तेसाब	4	21	बीसवें हफ्ते में	29
2	इन्सानी पैदाइश	5	22	बाईसवें हफ्ते में	31
3	सुलालाह	9	23	चौबीसवें हफ्ते में	32
4	अल नुतफा या स्पर्म	11	24	तीसवें हफ्ते में	32
5	औरत की अंडेदानी	13	25	बत्तीसवें हफ्ते में	32
6	अल नुतफा अल अमशाज	15	26	छत्तीसवें हफ्ते में	33
7	पहले और दूसरे हफ्ते में	17	27	पेट में बच्चे के ठहरने की मुद्दत	34
8	बच्चेदानी	18	28	अजूबे	34
9	तीसरे हफ्ते में	19	29	दूध की मुद्दत	38
10	चौथे हफ्ते में	21	30	शुग़ले मजमुआ	40
11	पाँचवें हफ्ते में	21	31	इन्सानी आज़ा के अजाएबात	41
12	सातवें हफ्ते में	23	32	मसलए इरतेका व मौलाना रूम	23
13	आठवें हफ्ते में	24	33	सांस की कसरत	46
14	नव्वें हफ्ते में	24	34	उम्र कैसे बढ़ाएँ	46
15	दसवें हफ्ते में	26	35	हमारे जिस्म की बर्की रौ	47
16	ग्यारहवें हफ्ते में	27	36	शमशी व क़मरी तनफ्फुस	48
17	बाराहवें हफ्ते में	27	37	बेटा या बेटी हासिल	
18	चौदाहवें हफ्ते में	28		करने के लिए क्या करें	50
19	पंद्राहवें हफ्ते में	28	38	नसली बीमारी का ख़ातमा	52
20	सोल्हवें हफ्ते में	28	39	मारफते जिस्मे इन्सानी	52

इन्तेसाब

نحمدہٗ ونصلی علی رسولہ الکریم

अम्माबाद ः किताबे हाज़ा "इन्सानी पैदाइश और उसके असरार" में तमाम मादरे मेहरबान और बिलखुसूस "हज़रते आमना र.अ." की बारगाहे अकीदत में बसद अदब व अहतेराम नज़र करता हूँ।

जो ना जाने कितने ही ग़म व तकलीफ उठाकर नौ माह अपने पेट में एक नई ज़िंदगी को जनम देती है। बवक़्त पैदाइश लोगों का सवाल होता है के लड़का या लड़की पैदा हुई, पर दर हकीकत वहाँ पर एक "माँ" का ही जनम होता है। अल्लाह तआला की कुदरते कामिला का अगर कोई मज़हरे अतम है तो वह मादरे मेहरबान ही है। अल्लाह का इरफान शिकमे मादर में कुल्ली तौर पर नज़र आता है। हज़ारों नक़्शे हज़ारों तग़य्युरात एक लमहा में माँ के पेट में जलवागर होते हैं। या यूँ कहो के तमाम आलम की ज़हूरगाह का नाम मादरे शिकम है। इस्लाम में माँ के तीन हक साबित हैं। क्यूँके !

अव्वल ः माँ ही बच्चे को अपने पेट में रख सकती है बाप नहीं।
दुव्वम ः माँ ही बच्चे को पैदा कर सकती है बाप नहीं।
सिव्वुम ः माँ ही बच्चे को दूध पिला सकती है बाप नहीं।

रहा परवरिश का सवाल तो इसमें बाप और माँ दोनों शरीक हैं। माँ की बोली ही "उम्मुल-जुबान" है। यानी हर कौम व मिल्लत अपनी जुबान को माँ की जुबान (मादरी जुबान) से मनसूब करते हैं।

गर कबूल इफतेदज़ है इज़्ज़ व शर्फ
हज़रत ख़्वाजा शेख़ मोहम्मद फारूक शाह कादरी अल-चिश्ती इफ्तेख़ारी

मारूफ पीर अफी अनहो

इन्सानी पैदाइश

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الاِ نْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْن . ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِىْ قَرَارٍ مَّكِيْن . ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا. ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ .

तर्जमा : और बेशक हमने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया, फिर उसे पानी की बूंद किया एक मज़बूत ठहराव में, फिर हमने उस पानी की बूंद को खून की फटक किया (जैसे जौक) फिर खून की फटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियाँ फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया फिर उसे और सूरत पर उठान दी तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सबसे बहतर बनाने वाला। (सूरह मोमिनून, आयत : 12-14)

Translate : 12 : Man We Did Create From A Quintessence (Of Clay)

13 : Then We Placed Him As (A Drop Of) Sperm

14 : Then We Made The Sperm Into A Clot Of Congealed Blood . Then Of That Clot
We Made A (Foetus) Lump , Then We Made Out Of That Lump Bones And Clothed The Bones With Flesh, Then We Developed Out Of It Another Creature.
So Blessed Be God The Best To Create

(By A. Yusuf Ali)

हदीस शरीफ : नुतफा चालीस दिन बाद अलका (जैसे जौक) बन जाता है। फिर चालीस दिन के बाद यह मुदग़ा (चबाई हुई बोटी की तरह) की शकल इख़्तियार कर लेता है फिर अल्लाह की तरफ से एक फरिश्ता आता है जो उसमें रूह फूँकता है। यानी चार महीने के बाद नफख़े रूह होता

है और बच्चा एक वाज़ेह शकल में ढल जाता है।

(सहीबुख़ारी,किताबुलअम्बियावकिताबुलकदर,मुस्लिम,बाबुलकैफियतुख़लकुलआदमी)

इन्सानी पैदाइश अजीब व ग़रीब व पुर असरार है। आज तक इस राज़ से कोई वाकिफ ना हो सका सिवाए एक ज़ाते वाहिद के जो हकीकी ख़ालिक व मालिक है।

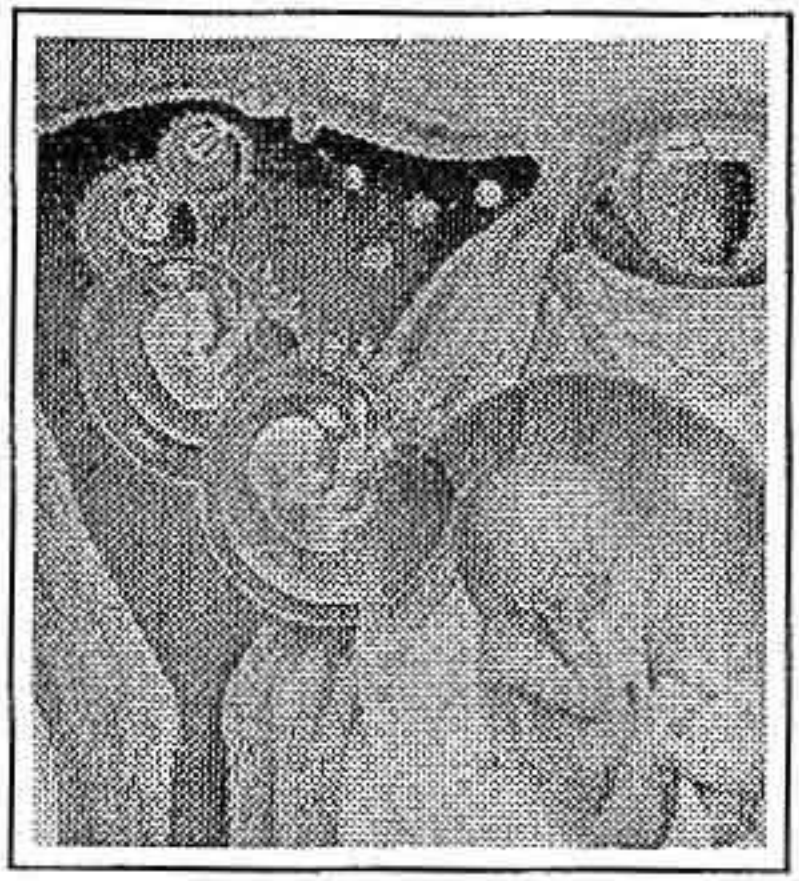

اَلْاِنْسَانُ سِرِّیْ وَاَنَا سِرُّہٗ

मैं इन्सान का राज़ हूँ इन्सान मेरा राज़ है। आइए कुर्आन की रौशनी में और इरफान की रहबरी में और सायंसी तजुरबात की बुनियाद पर कुछ हम भी राज़ पाएँ। एक जगह अल्लाह तआला फरमाता है।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُوْرًا .

तजुमा : बेशक इन्सान पर एक वक़्त वह गुज़रा के कहीं उसका नाम भी ना था। (सूरह दहर, आयत : 1)

परवरदिगार का लाख लाख अहसाने अज़ीम है जिसने इन्सान को नेस्ती से हस्ती में, अदम से वजूद में लाया।

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ तर्जुमा : तो चाहिए के इन्सान ग़ौर करे के किस चीज़ से बनाया गया है। (सूरह तारिक, आयत : 5)

अल्लाह तआला इन्सान को दावते फिकर देता है के इन्सान अपने आप पर ग़ौर करे के इस से कब्ल वह क्या था। एक नाकाबिले ज़िक्र चीज़ थी जिसको हमने वजूद में लाया। अगर इन्सान अपनी तख़लीक़ पर ग़ौर व ख़्वास करे तो उसे अपने ख़ालिक व मालिक तक पहुँचने का रास्ता मिल जाएगा। मगर किसी की रहबरी असद ज़रूरी है। अगर इन्सान इसके

बरअक्स अक्ल के भरोसे पर खुद को तलाश करने निकले तो अक्ल का पहला सवाल यह होगा के मैं किस चीज़ से बना हूँ? इसकी अक्ल आँख के ज़रिए मुशाहदा करके बता देगी के तू एक गोश्त व पोस्त व हड्डियों से बना है। फिर अक्ल सवाल करेगी के यह सब किस से बने हैं? फिर जवाब मिलेगा यह सब नुतफा से बने। फिर सवाल उठेगा नुतफा किस से बना? फिर जवाब मिलेगा के यह खुलिए से बना। फिर खुलिया किस से बना। यहाँ आकर अक्ल दम तोड़ देगी और वह इसी चक्कर में ज़िंदगी बर्बाद कर देगा। मगर जिन्हें रहबरी नसीब हुई है उसे साफ पता है के हर चीज़ का बनाने वाला ख़ालिक है। مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ (जिसने खुदको पहचाना तहकीक उसने रब को पहचाना)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّأُنْثٰى (सूरह हुजरात, आयत ः 13) तजुर्मा ः ऐ लोगों हम ने तुमहें एक मर्द (XY) और औरत (XX) से पैदा किया। दिमाग़ के पीछे एक मकाई के दाने के बराबर उज़ू होता है। जो सिगनल (इशारा) पाते ही फ्वालिकल इस्टिम्युलिटिंग हारमोन (FSH) जोके पिटियूटरी ग्लैंड (Pitutary Gland) से आता है और सरटोली खुलियात (Sertoli Cells) को मुतहरिक करता है। इस हारमोन की ग़ैर मौजूदगी में नुतफा (Sperm) बनना नामुम्किन है। सरटोली खुलिया मुतहरिक होने के बाद अॅस्ट्रोजन (Oestrogen) बनाता है। इसी के साथ साथ लेडिग खुलिया (Leydig Cell) ल्यूटेनायज़िंग हारमोन (Leutinising Harmone) के ज़रिए मुतहरिक होते ही यह एक हारमोन बनाता है जो के टेसटेसट्रॉन (Testestrone) है। टेसटेसट्रॉन के ज़रिए मर्दो की अहम खुसुसयात ज़ाहिर होने लगती है। यह टेसटेसट्रॉन नुतफा (Sperm) के बनाने में बहुत अहम साबित होता है।

नुक्ता ः स्पर्म (Sperm) को बनाने के लिए सरटोली खुलिया और लेडिग खुलिया पिटियूटरी ग्लैंड के हुक्म पर काम करने लगते हैं जबके पिटियूटरी ग्लैंड इन से काफी दूर है और साथ ही उनहों ने इसे कभी देखा तक नहीं

और जिसकी बनावट इनसे काफी अलग है। पिटियूटरी ग्लेंड के हुक्म ना मिलने पर दीगर खुलियात अपना काम भी शुरू नहीं कर सकते। यह आख़िर पिटियूटरी ग्लैंड का हुक्म क्यूँ मानते हैं ? इससे साफ ज़ाहिर है के इसका बनाने वाला कोई मौजूद है।

अगर सरटोली खुलिये को फ्वालिकल इस्टिम्युलिटिंग हारमोन (FSH) का मतलब ही ना मालूम हो तो ऑस्ट्रोजन नहीं बनेगा और स्पर्म बनेगा ही नहीं। अगर इस सिलसिले की एक भी कड़ी टूट जाती है तो पूरा निज़ाम दरहम बरहम हो जाएगा।

नोट ः इससे साफ ज़ाहिर है के खुदा एक है जिसने इन सबके दरमियान (आज़ा व खुलियात) के तआल्लुक को बनाया और वही है जिसने पिटियूटरी ग्लेंड और हायपोथेलेमस व लेडिग और सरटोली खुलिये को रूजु किया ताके यह यक़ीन हो जाए के स्पर्म (Sperm) की तख़लीक़ हो चुकी और इसीने इनहें सलाहियत दी के एक दूसरे की जुबानों और इशारों को समझ सकें ताके पता चले के हर चीज़ जो हो रही है वह खुदा के हुक्म से हो रही है।

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرضِ तर्जुमा ः वह आसमान से लेकर ज़मीन तक (हर) काम की तदबीर करता है। (सूरह सजदा, आयत ः 5)

नुक्ता ः सीमायनल वेसीकल के ज़रिए एक माए तय्यार होता है जो स्पर्म (Sperm) को इस मुश्किल सफर में यानी इसके निकलने के बाद से लेकर बच्चेदानी (Uterus) तक पहुँचने में साथ देता है। इस बात से साफ ज़ाहिर होता है के सीमायनल वेसीकल के ज़रिए जो माए फ्रुकटोस (Fructose) और प्रोस्ट्रेट ग्लैंड (Prostrate Gland) फायब्रोनोजन (Fibronogen) निकलता है वह औरत के पोशीदा आज़ाओं के बारे में बखूबी जानता है। "जहाँके वह इससे पहले कभी नहीं गया"

सुलाला (Sulalah)

جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۔

तर्जुमा : उसकी नसल रखी एक बेकदर पानी के निचोड़ से।
(सूरह सजदा, आयत : 8)

सुलाला यह एक अरबी लफ्ज़ है जिसके मानी किसी चीज़ का बहतरीन हिस्सा। निचोड़, जौहर, चुना हुआ, मुजमल, खुलासा माद्दाए मानविया।

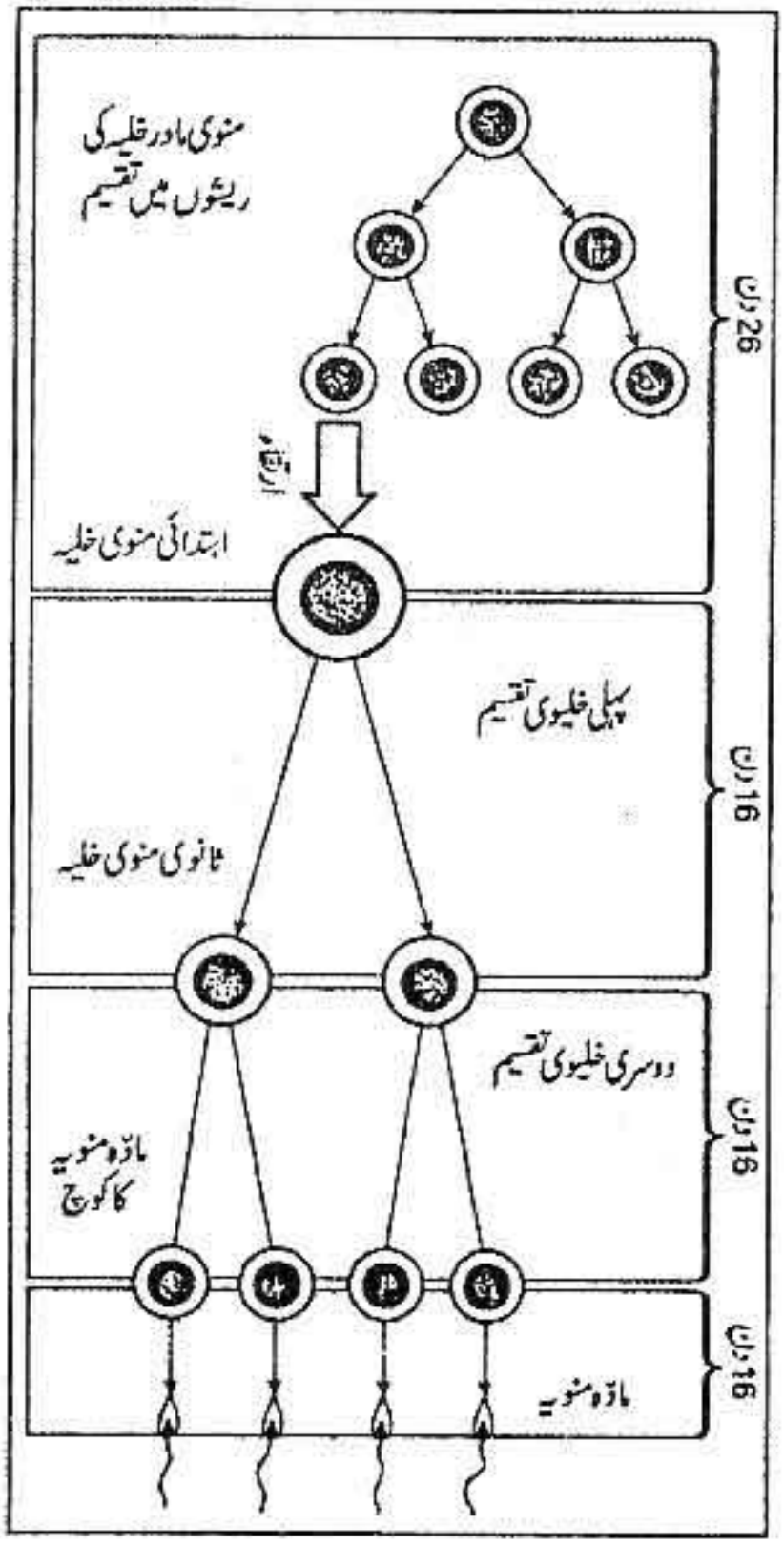

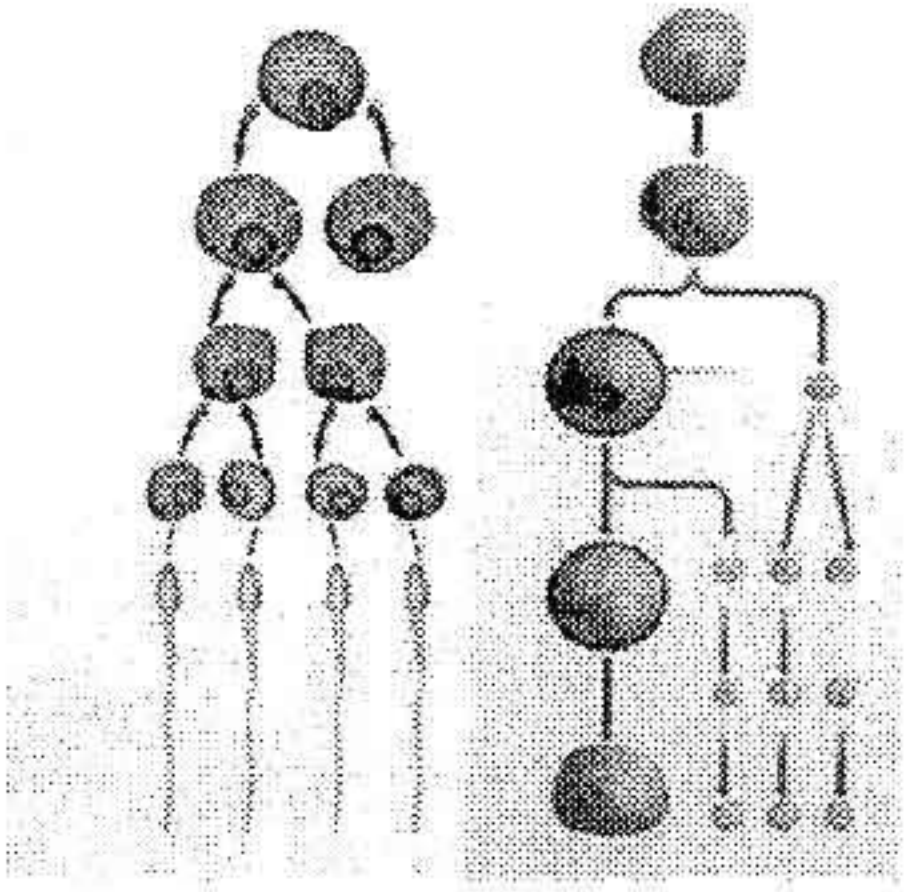

SPERMATOGENESIS → मर्द के नुतफे की तशकील

GERM CELLS → जरासीम के खुलियात

↓ MITOSIS → मसावी तकसीम

SPERMATOGONIA → नुतफा बनने से पहले का मुकाम

↓

PRIMARY SPERMATOCYTE → कुरोमोज़ोम
(46 XY)

↓

FIRST MEIOTIC DIVISION → पहली तकसीम

↓

SECONDARY SPERMATOCYTES → दो हिस्सों में तकसीम

23X 23Y

SECOND MEIOTIC DIVISION → दूसरी तकसीम

23X 23X 23Y 23Y → चार हिस्सों में तकसीम

SPERMATIDS → बैरूनी बदलाव के बाद नुतफे में तबदील हो गया

↓

MORPHOLOGICAL CHARGES
TO SPERMATOZOA
(SPERMIOGENESIS)

अल-नुतफा या स्पर्म (Sperm)

مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهٗ (सूरह अबस, आयत : 19)

तर्जुमा : पानी की बूँद से इसे पैदा फरमाया फिर इसे तरह तरह के अन्दाज़ों पर रखा। (Sperm) एक अरबी लफ्ज़ है जिसके मानी कसीर या क़लील पानी के होते हैं। मगर अल्लाह तआला ने سُلٰلَةٌ مِّنْ مَّآءٍ कह कर यह वाज़ेह कर दिया के कोई इसे सिर्फ पानी की बूँद ना समझे, इस बूँद में इसका जोहर या निचोड़ (सुलाला) मौजूद है और पानी इसका हिफाज़ती ग़िलाफ है। मौलाना ए. युसुफ अली ने अंग्रेज़ी तर्जुमए कुर्आन में नुतफा का तर्जुमा स्पर्म (Sperm) किया है और आज जदीद सायंस की जुबान में भी इसे स्पर्म (Sperm) कहते हैं।

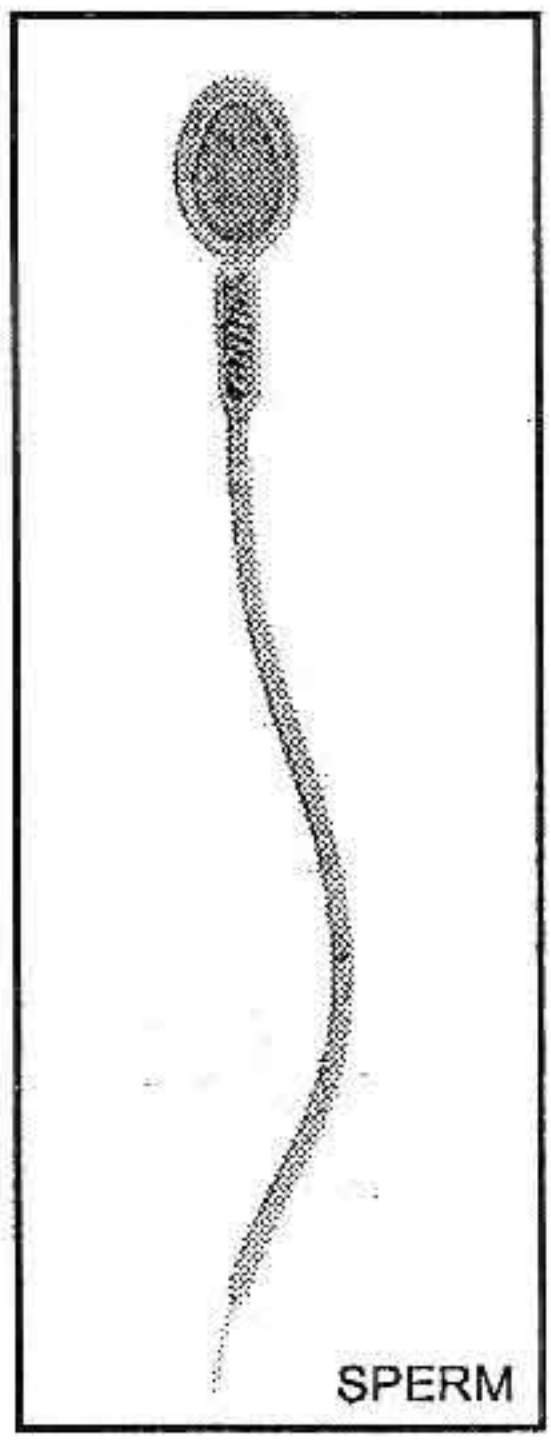

स्पर्म व नुतफे की बनावट :

स्पर्म (Sperm) के चार हिस्से होते हैं।

(1) सर : इसका सर चपटा और अंडे नुमा होता है जिसकी लम्बाई 5 माइक्रोन (5μ) होती है।

$$1\mu = 10^{-6}\ m$$

$$\therefore\ 1\mu = \frac{1}{1000000}\ m$$

यानी 1 माइक्रोन बराबर 1 मीटर का दस लाखवाँ हिस्सा है। इस हिसाब से 5 माइक्रोन 1 मीटर का दो लाखवाँ हिस्सा होगा।

सर के ऊपरी हिस्से को एक्रोज़ोम (Acrosome) कहते हैं अगर यह ना

होता तो इसके कई ख़ामरे (Enzyme) जो अंडे में दाख़िल होने में मदद करते हैं वह ना होंगे और अंडा का मिलाप (Fertilize) नहीं होगा।

(2) गरदन ः गरदन इसको मिडपीस (Midpiece) भी कहते हैं। इसी में तवानया (Mitochondria) होता है और यह तवानाई का ज़ख़ीरा है। अगर यह ना हो तो स्पर्म (Sperm) अपना काम सर अनजाम नहीं दे सकता।

(3) दुम ः इसकी दुम के दो हिस्से होते हैं एक बैरूनी दूसरी दरूनी जिस तरह धागा होता है। अगर इसकी दुम ना हो तो वह हरकत नहीं कर सकता इसे आगे बढ़ने में इसकी दुम मदद करती है।

(4) दुम का आखरी हिस्सा ः यह बहुत बारीक होता है। दुम की कुल लम्बाई 52 माइक्रोन (52 μ) होती है। इस लिहाज़ से स्पर्म (Sperm) की कुल लम्बाई 57 माइक्रोन (57μ) होती है।

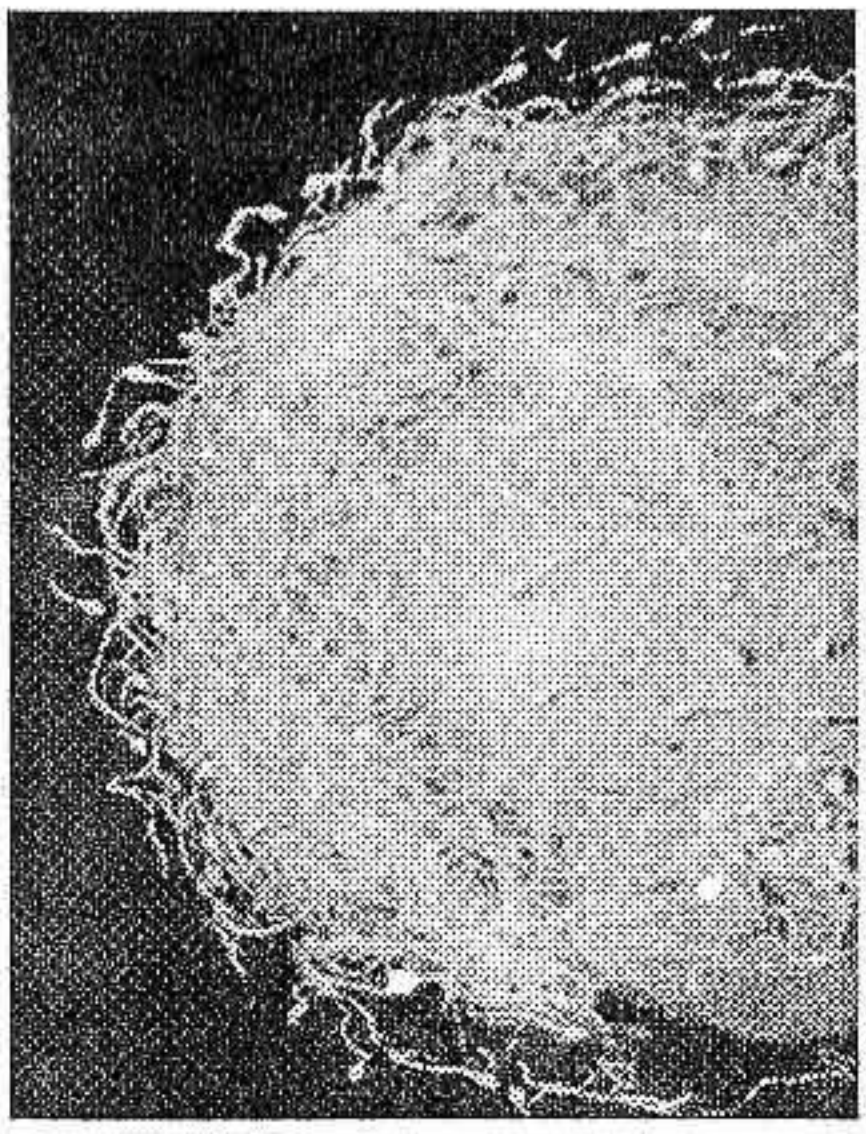

नोट ः वक़्ते इन्ज़ाल 30 करोड़ (300 Million) स्पर्म इस सफर के लिए निकलते हैं। इन में से ताकतवर हज़ार (1000) स्पर्म ही अंडे तक पहुँच पाते हैं लेकिन इन में से सिर्फ एक ही दौड़ को जीत पाता है।

क्रोमोज़ोम (Chromosome) ः खुलिये के मरकज़ के अंदर मरकज़वी माया होता है जिसमें मरकज़ीचा और क्रोमेटन का जाल होता है। जब खुलिया तक्सीम से पहले दोहरा (Duplication) होता है।

क्रोमेटेन धागे नुमा शकल इख़्ति तयार कर लेता है जिसे क्रोमोज़ोम कहते हैं। क्रोमोज़ोम ही खुलिये की तौलीद और दूसरे अफआल पर काबू रखते हैं। क्रोमोज़ोम में बहुत से कताअत मनकों की तरह जुड़े होते हैं जिन्हें जीन (Gene) कहते हैं। इन ही जीन की बदौलत मौरिसों की खुसुसियत आयंदा नसलों में मुन्तकिल होती है।

46 क्रोमोज़ोम में '44' ऑटोज़ोम और एक जोड़ा सेक्स क्रोमोज़ोम होते हैं।

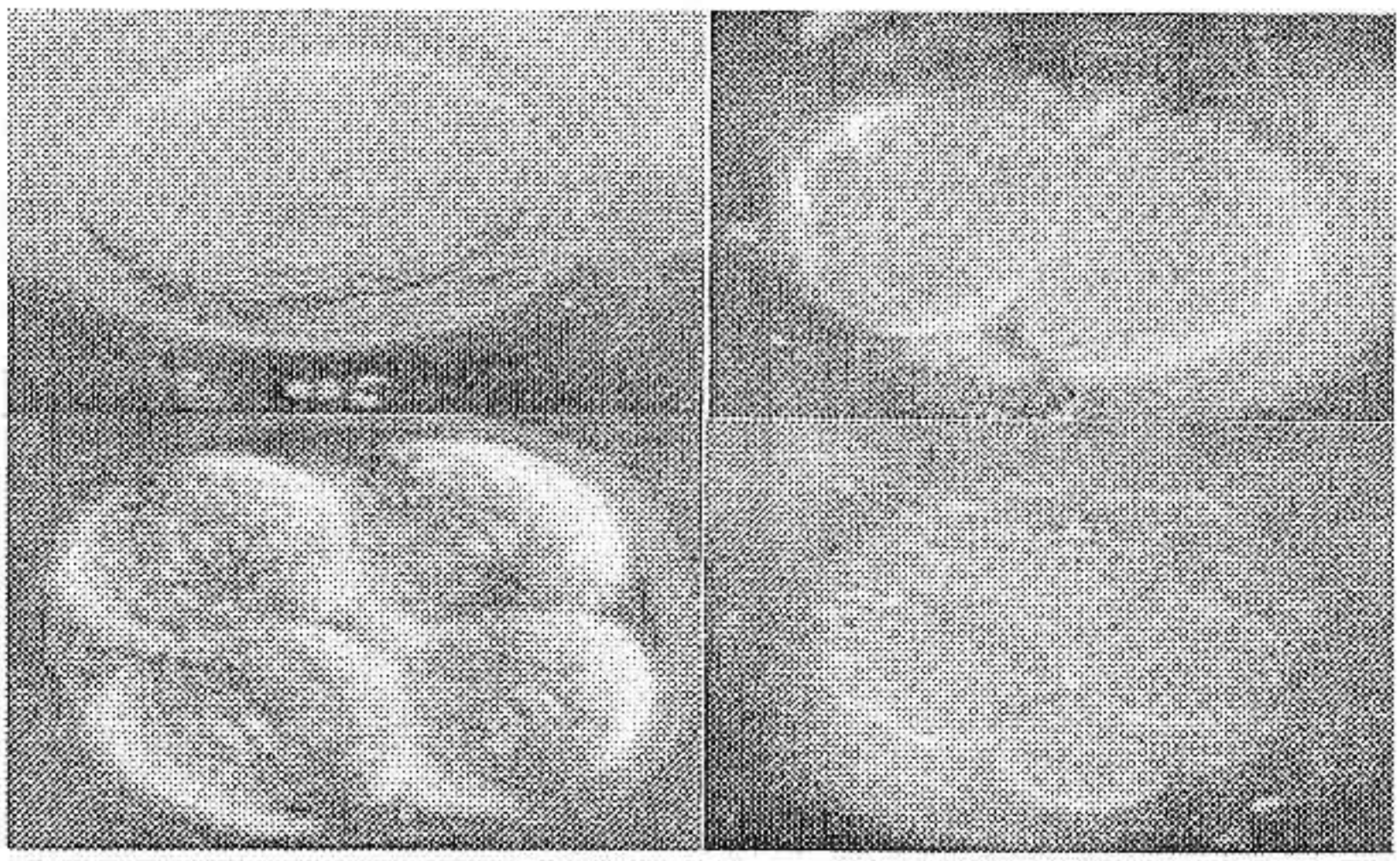

औरत की अंडेदानी (Ovary)

औरत की अंडेदानी में (Ovary) में हर महीने एक ही अंडा पैदा होता है। अंडा 150 माइक्रोन (150μ) की साइज़ का होता है। यह बेरंग और आधा आर पार (Semi Transparent) दिखने वाला गोले नुमा होता है और इसका बाहरी हिस्सा एक नर्म मगर मज़बूत ग़िलाफ से ढँका होता है। अंडे के अंदर कार्बोहाइडराइड (ग्लोकोज़), फेट (चर्बी) और प्रोटीन होते हैं जो इसे बच्चेदानी (Uterus) तक पहुँचने में तवानाई बख़शते हैं।

OOGENESIS → औरत के अंडे की तशकील

GERM CELLS → जरासीम के खुलियात

↓ MITOSIS → मसावी तकसीम

OOGONIA → अंडा बनने से पहले का मुकाम

↓

PRIMARY OOCYTE (46 XX) → क्रोमोज़ोम

↓

ARRESTED FIRST MEIOTIC DIVISION (UPTO PUBERTY) → पहली तकसीम

↓

MATURATION OF GRAAFIAN FOLLICLE → अंडे की शकल इख़्तियार करने से पहले

↓

COMPLETION OF FIRST MEIOTIC DIVISION → पहली तकसीम मुकम्मल हुई

SECONDARY OOCYTE 23 X

FIRST POLAR BODY 23 X → दो हिस्सों में तकसीम

↓

OVULATION → अंडे तय्यार होने का अमल

NOT FERTILIZED

FERTILIZED → मुकम्मल ना मुकम्मल

↓

DEGENERATION WITHIN 24 Hrs.

↓

COMPLETION OF SECOND MEIOTIC DIVISION → ना मुकम्मल अंडा 24 घंटों में ख़तम हो जाता हे

→ दूसरी तकसीम मुकम्मल

FEMALE PRONUCLEUS 23X

SECOND POLAR BODY 23X

Scheme Showing Gametogenesis

(इतने बदलाव के बाद यह अंडे की शकल इख़्तियार कर लेता है)

اَلنُطفَةُ الاَمشَاجُ
अल-नुतफातुल-अमशाज
(Al-Nutfahal-Amshaj . Zygote)

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِ نْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ اَمْشَاجٍ (सूरह दहर, आयत : 2)
तर्जुमा : बेशक हमने इन्सान को पैदा किया मिली हुई मनी से।

हदीस पाक : فقال يا محمد ، مم يخلق الانسان قال رسول الله يا يهودى ، من كل يخلق ، من نطفة الرجل و من نطفة المراة
(मसनद इमामे अहमद)
तर्जुमा : ऐ मोहम्द स.अ.व. कहिये के इन्सान कैसे बना? रसूल अल्लाह स.अ.व ने कहा ऐ यहूदी तमाम इन्सान मर्द और औरत के नुतफे से बने।

जब आदमी का स्पर्म (Sperm) और औरत का अंडा (Ovum) मिलते हैं उसे नुतफा अल-अमशाज (Zygote) कहते हैं। स्पर्म (Sperm) आदमी के ज़कर (आलाए तनासुल) से निकल कर औरत के अन्दामे निहानी से अपना सफर शुरू करता है। यह एक मिनट में 1mm से 3mm की रफतार से चलता है। इसे अंडे की नली (Fallopian Tube) तक पहुँचने में कुल 45 मिनट लग जाते हैं। जब स्पर्म (Sperm) अंडे (Ovum) की जिल्द को छूता है उस वक़्त एक नई चीज़ और एक नया रद्दे अमल ज़हूर में आता है। अंडा (Ovum) फर्टीलाइज़िंग नामी एक कीमिया छोड़ता है जो नुतफे को अपनी तरफ राग़िब करता है। जब नुतफा (Sperm) अडें (Ovum) की अंदरूनी जिल्द को छू लेता है तब वह एन्टी फर्टीलाइज़िंग नामी कीमिया छोड़ देता है ताके दूसरे स्पर्म (Sperm) इस पर राग़िब ना हों। क्यूँके स्पर्म और ओवम पर चार्ज होने से दोनों के असरात फर्टीलाइज़ेशन पर दिखते हैं। अंडा (Ovum) हमेशा कुव्वते अनफालिया (Negative Charge) और स्पर्म (Sperm)

हमेशा कुव्वते फालिया (Positive Charge) रखता है। जिसकी वजह से अंडा (Ovum) सभी स्पर्म (Sperm) को अपनी तरफ राग़िब करता है। अब जैसे ही पहला स्पर्म अंडे (Ovum) के अंदर जाता है तब अंडा कुव्वते फेलिया इख़्तियार कर लेता है और अपनी जिल्द को दोबारा बना लेता है ताके दूसरे स्पर्म अंदर दाख़िल ना हो पायें और बचे हुए सारे स्पर्म इस से दूर चले जाएँ। जिस तरह एक ख़ला का रॉकेट ज़मीन पर लौटते वक़्त अपने ईन्धन के टेंक को ज़मीन के आब व हवा में छोड़ देता है इसी तरह स्पर्म भी अपनी दुम का ग़ैर मामूली इस्तेमाली वज़न अंडे (Ovum) में जाते वक़्त छोड़ देता है और सिर्फ सर अंडे में पहुँचता है।

नुक्ता : इस में एक कुदरत का रम्ज़ पोशीदा है के स्पर्म जो सफर कर रहा है वह इस के साइज़ से कई गुना लम्बा रास्ता है। दूसरी बात इस रास्ते पर आज से पहले वह कभी नहीं गया। यह पूरा रास्ता उसे अंधेरे में तय करना होगा। सब में बड़ी बात यह है के ना उसे आँखें हैं ना उसे कान। यह मुक़ाम صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ (अंधा, गूंगा, बहरा,) का है। जिस तरह इन्सान ग़ैर के बतन में इस तरह का सफर करने पर इसे इतनी बड़ी दुनिया और आँख और कान और जुबान अता हुई, इसी तरह का सफर अगर वह किसी मुर्शिदे कामिल की रहबरी में अपने अंदर करे तो फिर क्या अता ना होगा? इशारा काफी है।

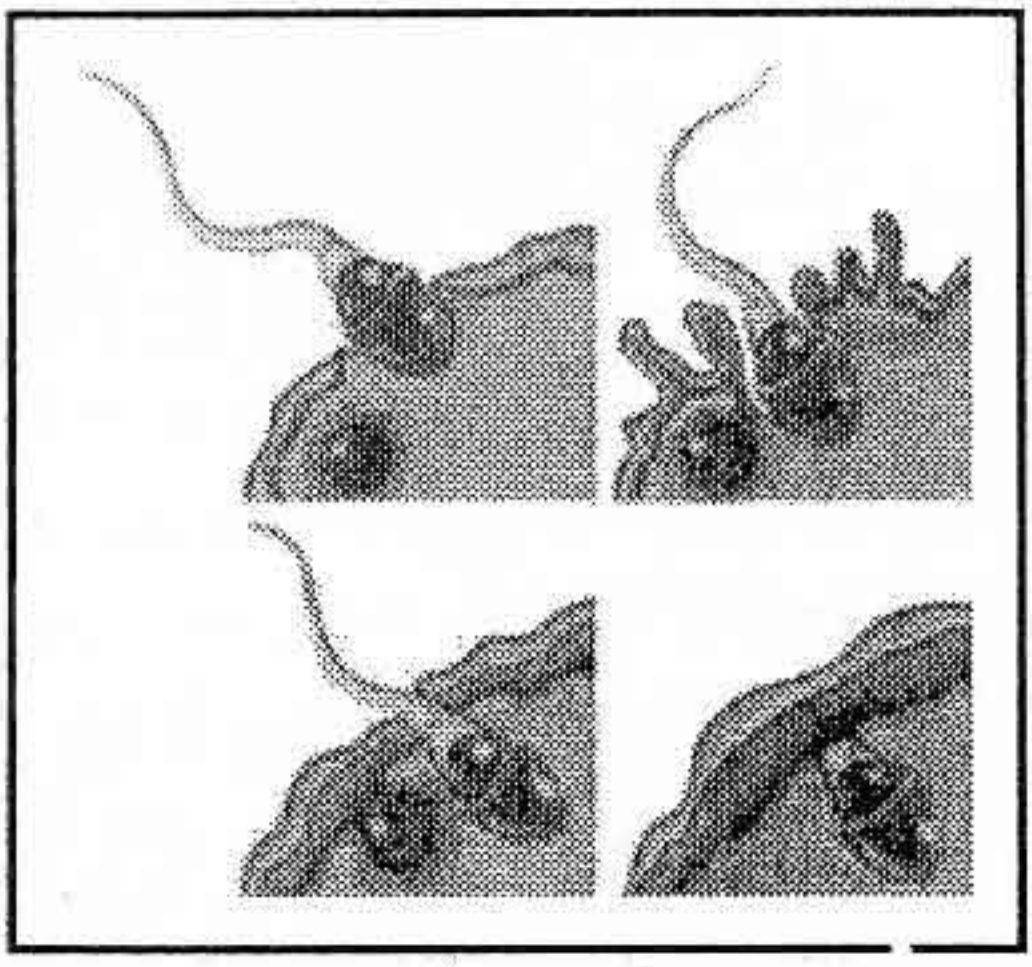

नोट : स्पर्म और अंडे का जुड़ना लाज़मी है। जिस तरह दूध में पनीर मिल

जाता है अगर यह ना हो तो इसकी एक वजह बयान की गई है के हर जानदार मख़लूक़ का अंडा फर्टीलाइज़िंग नामी कीमिया छोड़ता है जिसकी अपनी किमियाई खुसुसयात है जिस से दूसरी ग़ैर जिंस के स्पर्म के खुलियात अंडे तक नहीं पहुँच पाते, मसलन बिल्ली, घोड़े को पैदा नहीं कर सकती और इन्सान किसी दूसरे जानदार मख़लूक़ से वस्ल नहीं कर सकता।

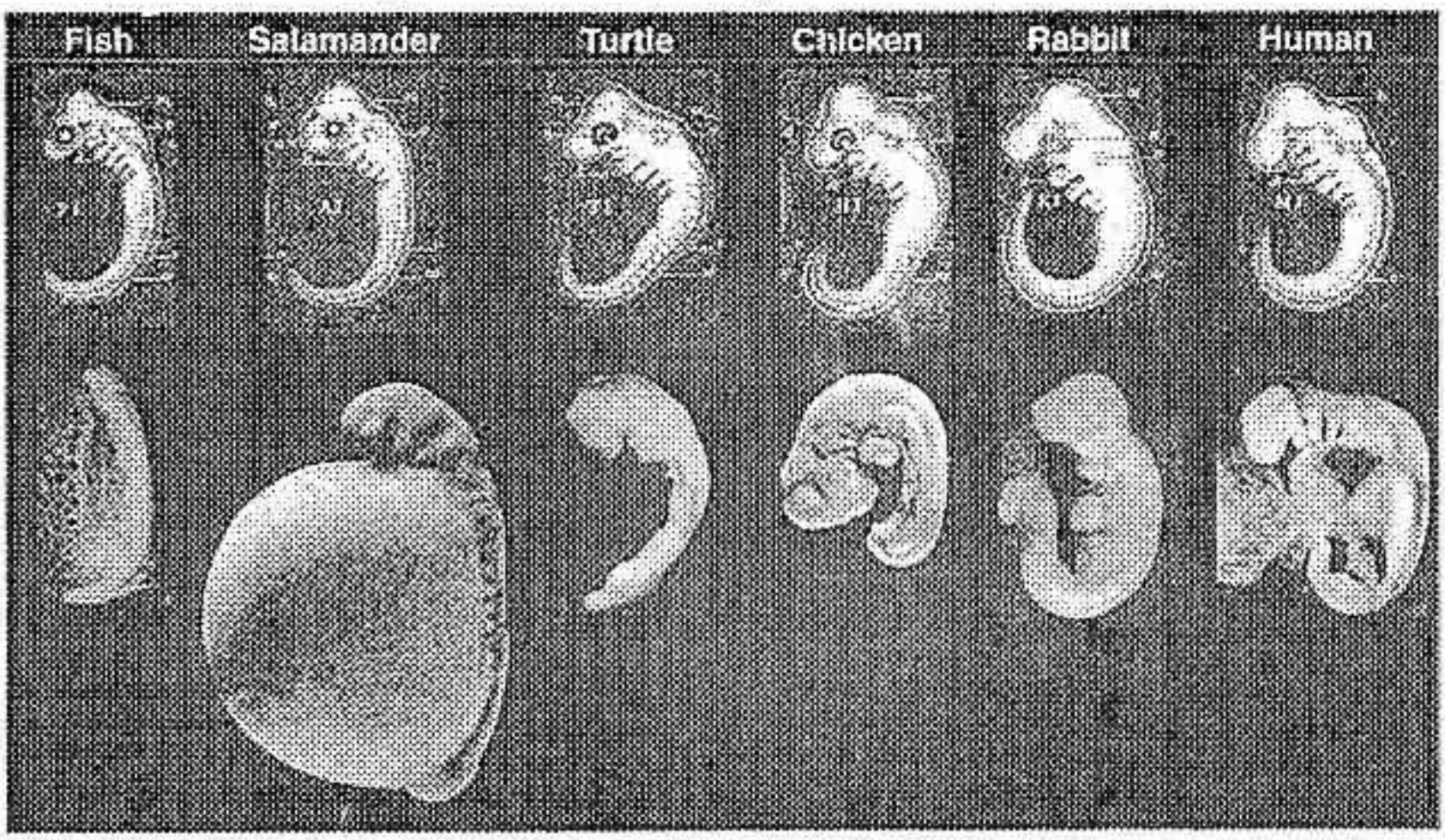

पहले व दूसरे हफ्ते में

स्पर्म (Sperm) और अंडा (Ovum) औरत की अंडे की नली (Fallopian Tube) में एक दूसरे से जुड़ जाते हैं। अब '23' क्रोमोज़ोम आदमी के और '23' औरत के क्रोमोज़ोम मिल कर '46' क्रोमोज़ोम बन जाते हैं जिस से इस आने वाले बच्चे की हर खुसुसयात तय करते हैं। इन दोनों के मिलाप से जो ज़ाइगोट (Zygote) बनता है उसे जनयन (Embryo) कहते हैं। यह अलका (عَلَقَةٌ) की इबतेदाई मंज़िल है। इस जनयन (Embryo) का कुल इहाता एक पिन के सर से छोटा होता है। अब जनयन (Embryo) बह कर अंडे की नली से बच्चेदानी (Uterus) का सफर तय करता है।

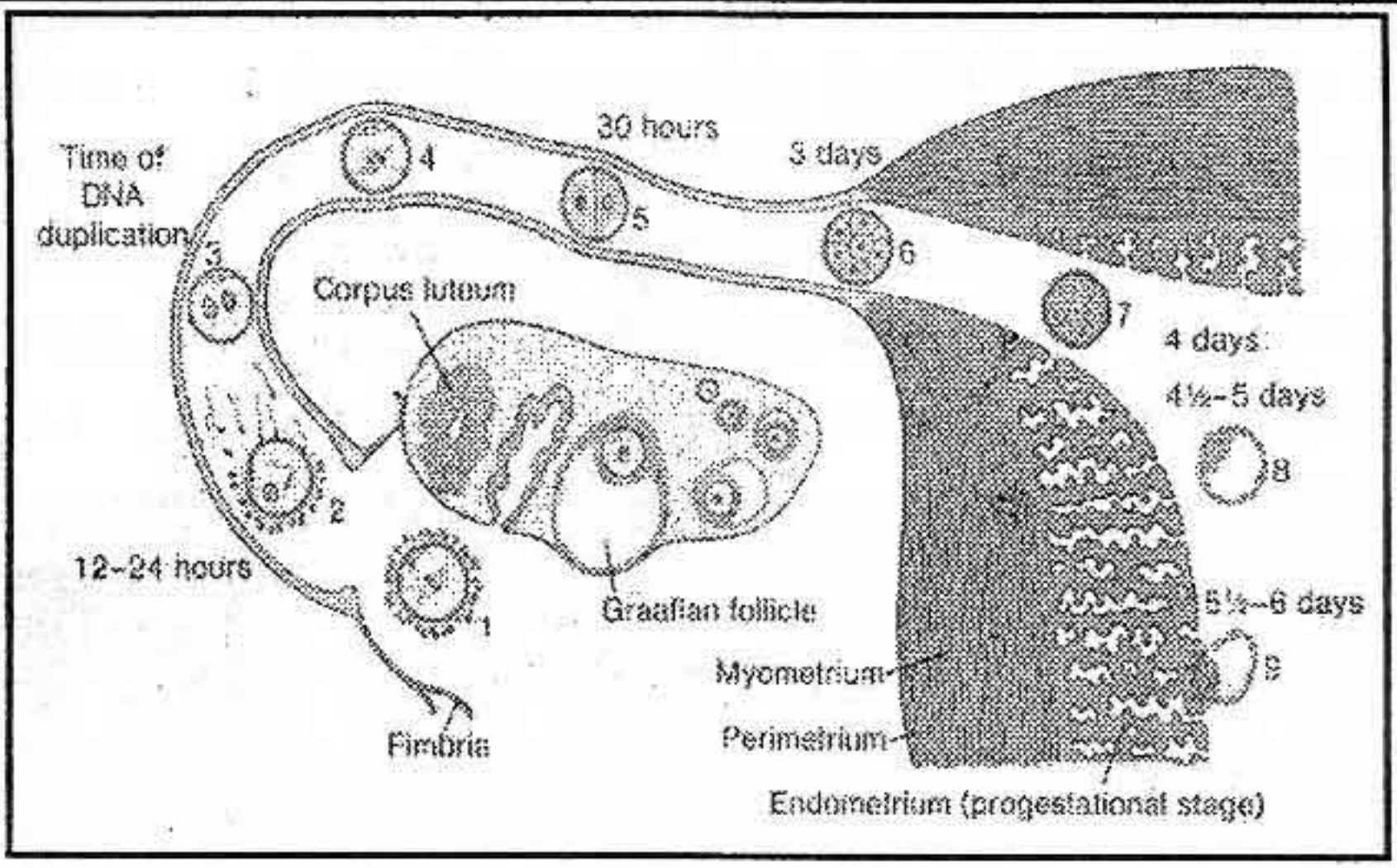

हदीस शरीफ़ः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद र.अ. से मरवी है के जब नुतफा (Sperm) माँ के पेट में वाके होता है और अल्लाह तआला इरादा करता है के इस से कुछ पैदा फरमाए तो वह नुतफा (Sperm) माँ के रोंगटे रोंगटे यहाँ तक के माँ के नाखुनों और माँ के बाल बाल में फैल जाता है।

(तफसीर रूहुलबयान पाराः 17 सफहाः 207)

बच्चेदानी (Uterus)

बच्चेदानी (Uterus) पट्ठे और चंद रगों का मजमुआ है। इस के पट्ठे का सर दिमाग़ में है और यह खोखला और थैली की शकल में होता है। जिसका वज़न लग भग 50 ग्राम होता है। इसकी मिसाल हवा वाले गुब्बारे की तरह है के हवा भर दो तो फूल जाता है फिर सुकड़ कर अपने मुकाम पर आ जाता है। यकीनन यह जगह बच्चे के बड़े होने के लिए काफी छोटी है। इस से यह साफ ज़ाहिर है के बच्चेदानी में हमल के दौरान काफी बदलाव आते हैं और इसकी साइज़ (Size) धीरे धीरे बढ़ती है और वज़न 1100 ग्राम हो जाता है।

तीसरे हफ्ते में

क़रारे मकीन قَرارِ مكين (Quarar Makeen)

فَجَعَلْنٰهُ فِیْ قَرَارٍ مَكِیْنٍ. اِلٰی قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ

तर्जुमा : फिर हमने उसे एक मेहफूज़ व मज़बूत जगह पर रखा एक मुकर्रा वक़्त तक। (सूरह मुरसलात, आयत : 21,22)

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِی قَرَارٍ مَّكِیْنٍ :

तर्जुमा : फिर उसे नुतफा (Sperm) बना कर मेहफूज़ जगह (Uterus) में करार दे दिया। (सूरह मोमिनून, आयत : 12)

अल्लाह तआला ने इस मुक़ाम पर जो लफ्ज़ " क़रारे मकीन " इसतेमाल किया या हमें सिखाया इस के बदले दुनिया की किसी भी जुबान का लफ्ज़ इसके मद्दे मुक़ाबिल रखा जाए तब भी जो लज़्ज़त जो अंदाज़ जो मिठास " क़रारे मकीन " में है इसके मुक़ाबले में सारे अलफाज़ हेच नज़र आते हैं। " क़रार " के माने इतमेनान, क़याम, आराम, ठहराव के हैं और " मकीन " के माने बहत महफूज़ व मज़बूत के हैं। दुनिया का कोई भी आदमी जब अपने रहने के लिए मकान ढूँडता है तो दो बातों को अपने पेशे नज़र रखता है। पहली बात जो मकान ले रहा हो वह हर तरहा से महफूज़ हो और वह हर तरह से मज़बूत हो। अगर यह दोनों बातें उस मकान में ना हों तो इन्सान क़रार या ठहराव नहीं कर सकता। यहाँ अल्लाह तआला ने इस मिले हुए जनयन (Embryo) के लिए महफूज़ मुक़ाम यानी क़रारगाह माँ के पेट के अंदर रहम करार दिया। अगर यह महफूज़ व मज़बूत क़रारगाह ना होती तो आज दुनिया में कोई इन्सान नज़र ना आता। तीसरे हफ्ते में जनयन (Embryo) अपने लिए बच्चेदानी

(Uterus) में एक जगह ढूँड कर मुनसलिक होकर इसमे ठहर जाता है जिस तरह जोंक (Like a leach) जिल्द को चिपक जाती है और अपनी

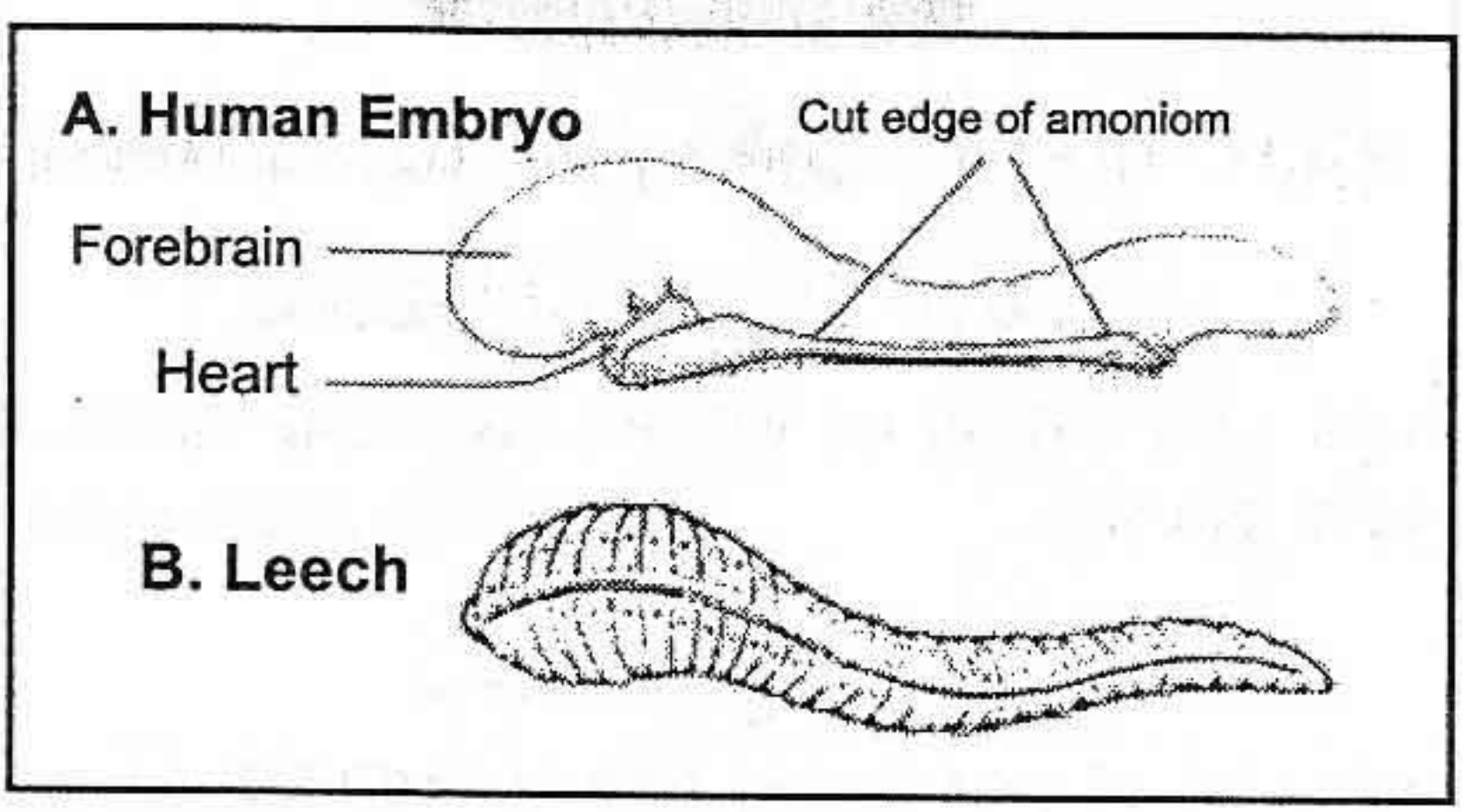

ग़िज़ा मुहय्या करती है। यह एक इंच के छठवें (1/6=0 .42 cm)हिस्से के बराबर है। अब इस से बढ़ते हुए जनयन (Embryo) में रीड़ की हड्डी (Back Bone) और निखाई डोर या हराम मग़ज़ की बत्ती (Spinal Cord) और निज़ामे उज़ूबी (Nervous System) बनना शुरू होगा और गुर्दे (Kidney), जिगर (Liver), अंतड़ियां इन आज़ाओं की शकल इख़्तियार कर लेते हैं।

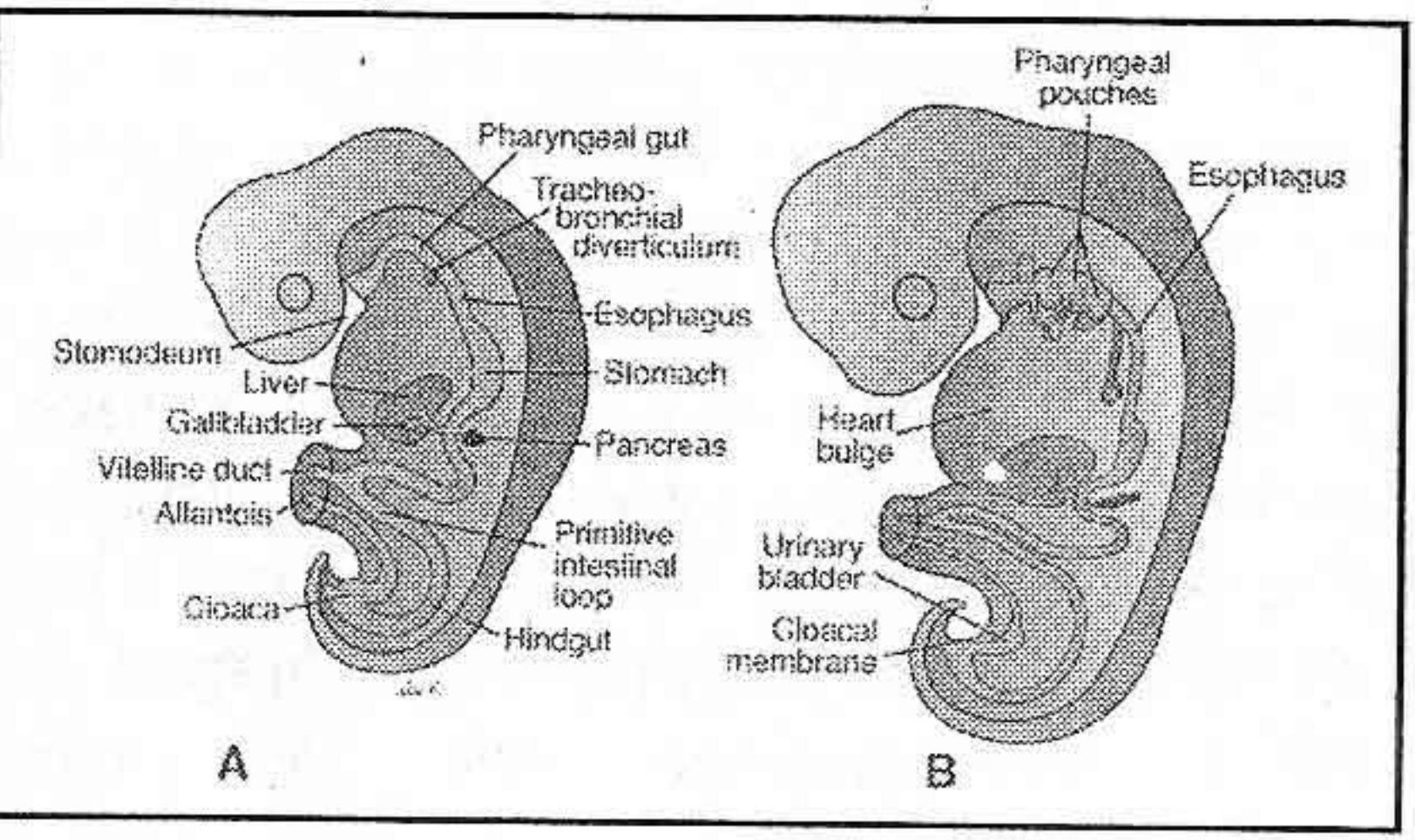

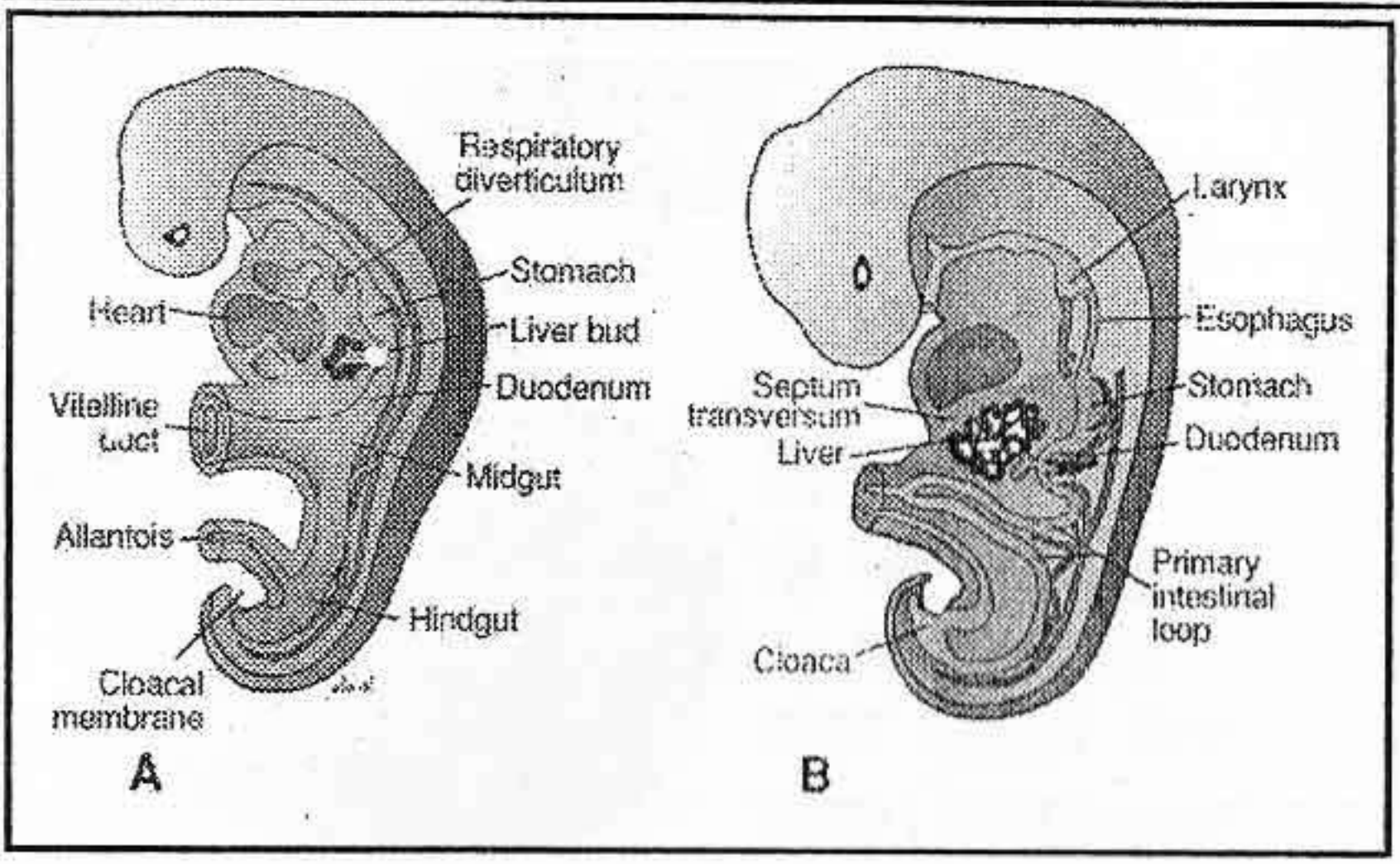

चौथे हफ्ते में

अब जनयन (Embryo) एक महरकाब (Harmone) पैदा करता है। जिसके ज़रिए से हैज़ (Menstrual Cycle) रूक जाती है।

وَ كُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ

तर्जुमा ः और हर चीज़ उसके पास एक अंदाज़े से है।

(सूरह रअद, आयत ः 8)

रहम अपने अंदर रहने वाले बच्चे से हैज़ का खून कम करती है और तबई कायदा है अगर अय्यामे हमल हामिला औरत से हैज़ ख़ारिज होतो अंदर वाले बच्चे का नुक़्सान होता है इस लिए के वही हैज़ का खून बच्चे की कुदरते इलाही से खुराक होती है। जब उसे खुराक नहीं मिलेगी तो वह अपनी ग़िज़ाइयत की कमी से मुरझा जाएगा या मर जाएगा। इसी तरहा अय्यामे हमल के बढ़ जाने में बच्चे को हैज़ का खून ज़्यादा से ज़्यादा पहुँचना मतलूब है।इस तरह से बच्चे की अंदरूनी तरबियत की भी तकमील होगी।

पाँचवें हफ्ते में

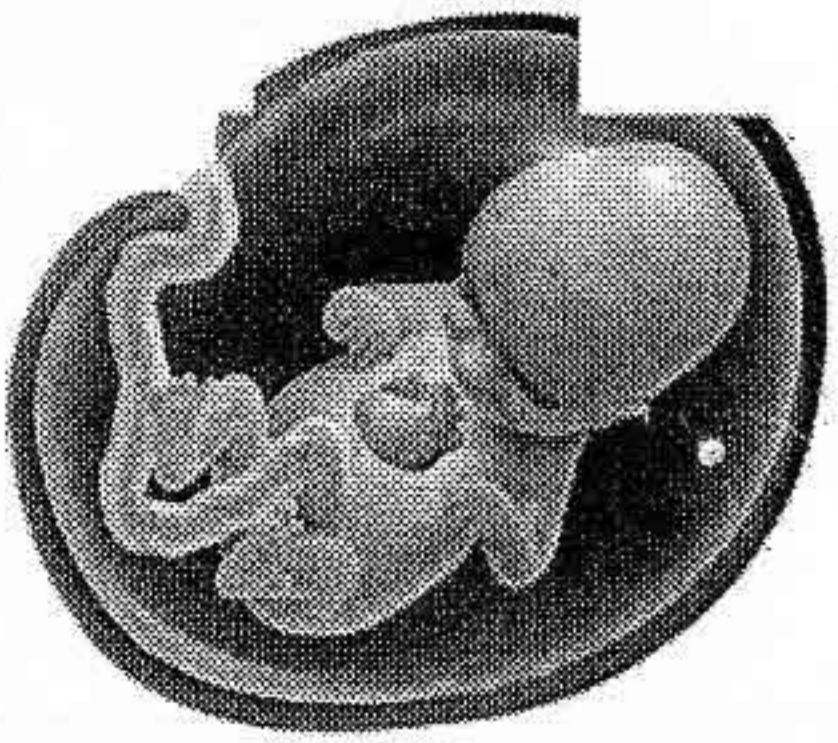

अब यह जनयन (Embryo) मुनक्का (Raisin) के उतना बड़ा होता है। अब एक नली (Placenta) इस बढ़ते हुए बच्चे की हर ज़रूरत को पूरा करने लगती है और न्यूरोल ट्यूब (Neural Tube) बढ़कर दिमाग़ को मुकम्मल कर इसके तीन हिस्सों को बढ़ा देती है।

(1) बड़ा दिमाग़ (Cerebral Cortex) यह दिमाग़ का ऊपरी आधे से ज़्यादा हिस्सा है। इसके मख़्सूस हिस्से जिस्म के मख़्सूस हिस्सों पर काबू रखते हैं। इस में मर्कज़े बासरा, मर्कज़े सामिआ, मर्कज़े शामा, दर्द और दबाव के मराकज़ होते हैं। इसका तआल्लुक होशमंदी, अक़्लमंदी, हिदायात, तजरूबात, सोचना और अहसास जमा किए जाते हैं।

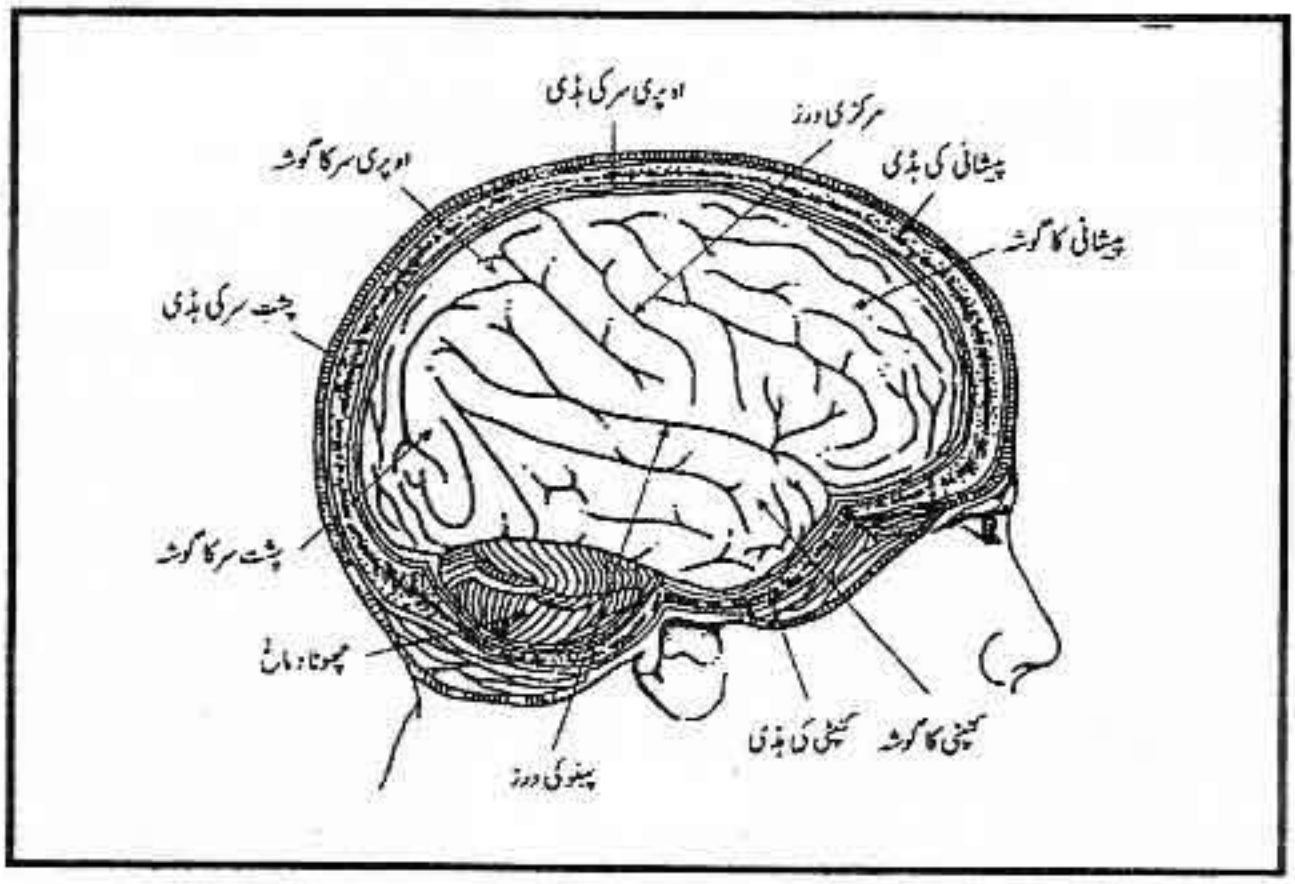

(2) छोटा दिमाग़ (Cerebellum) यह सर के निचले हिस्से में मौजूद दिमाग़ का निचला हिस्सा है। यह उज़लात की हरकात पर काबू रखता है और चीज़ों को पकड़ने पर और इनमें हमआहंगी पैदा करता है।

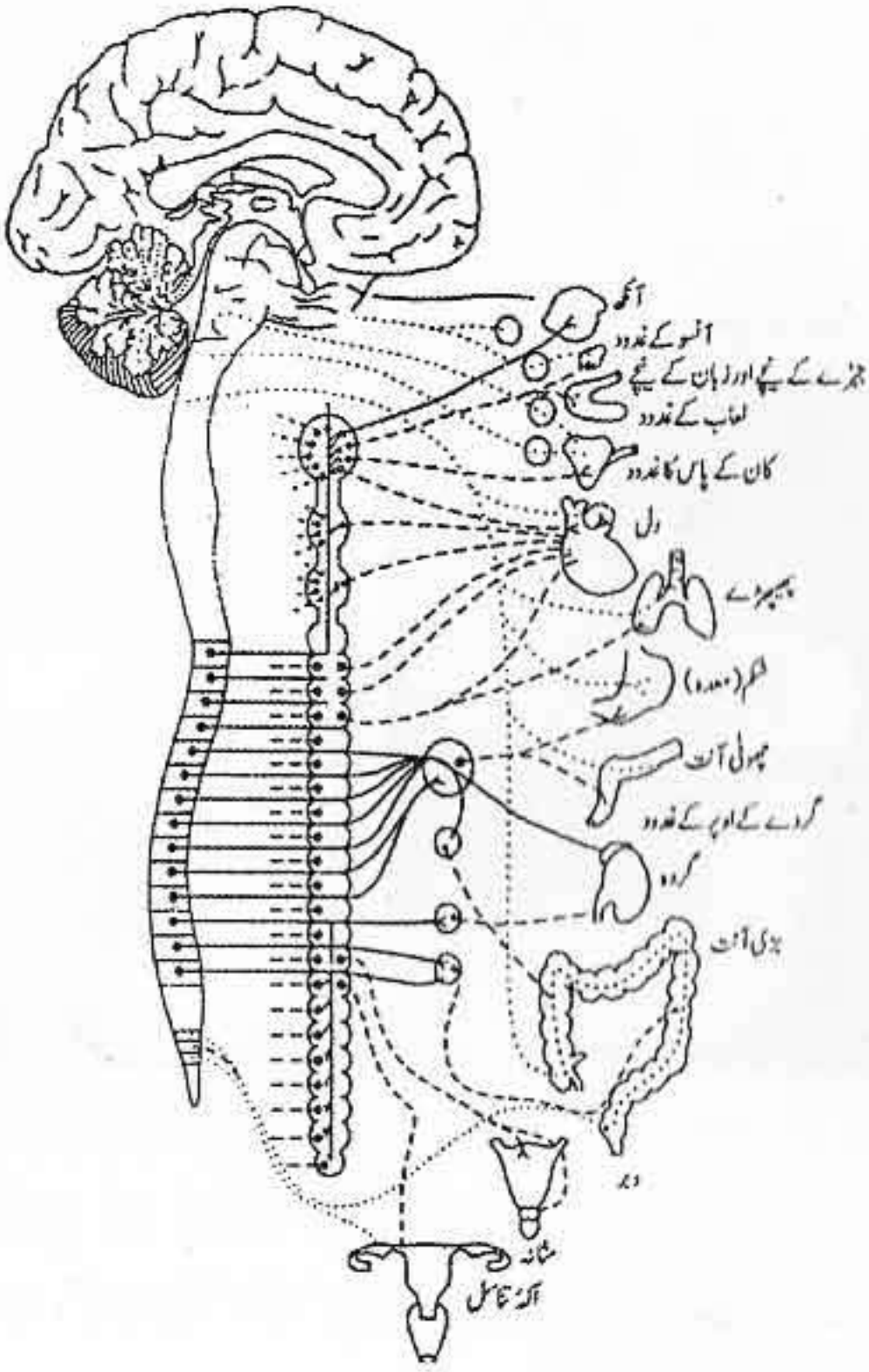

(3) निखाए मुसततील या सर हराम मग़ज़ (Medulla Oblongata) यह दिल की धड़कन, दौराने खून और तनफ्फुस पर क़ाबू रखता है। ज़्यादा तर अफआल मुनाकिसा और ग़ैर इरादी हरकात भी सर हराम मग़ज़ के ज़रिए काबू में रखी जाती हैं।

अब हराम मग़ज़ की बत्ती और हड्डी का कांटा (Spinal Cord and Spine)

तेज़ी से बढ़ने लगते हैं और अपना जाल (Network) पूरे बदन में फैलाने लगते हैं। साथ ही एक दुम की तरह नज़र आने लगते हैं।

सातवें हफ्ते में

هُوَالَّذِیْ یُصَوِّرُکُمْ فِی الْاَرْحَامِ کَیْفَ یَشَآءُ

तर्जुमा : वह माँ के पेट में तुम्हारी सूरतें जिस तरह की चाहता है बनाता है।
(सूरह इमरान, आयत : 6)

وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُم

तर्जुमा : और तुम्हारी तसवीर की तो तुम्हारी अच्छी सूरत बनाई।

(सूरह तग़ाबुन, आयत : 3)

अब इसकी धीरे धीरे शकले इन्सानी ज़ाहिर हो रही है, जैसे मुँह, जुबान,

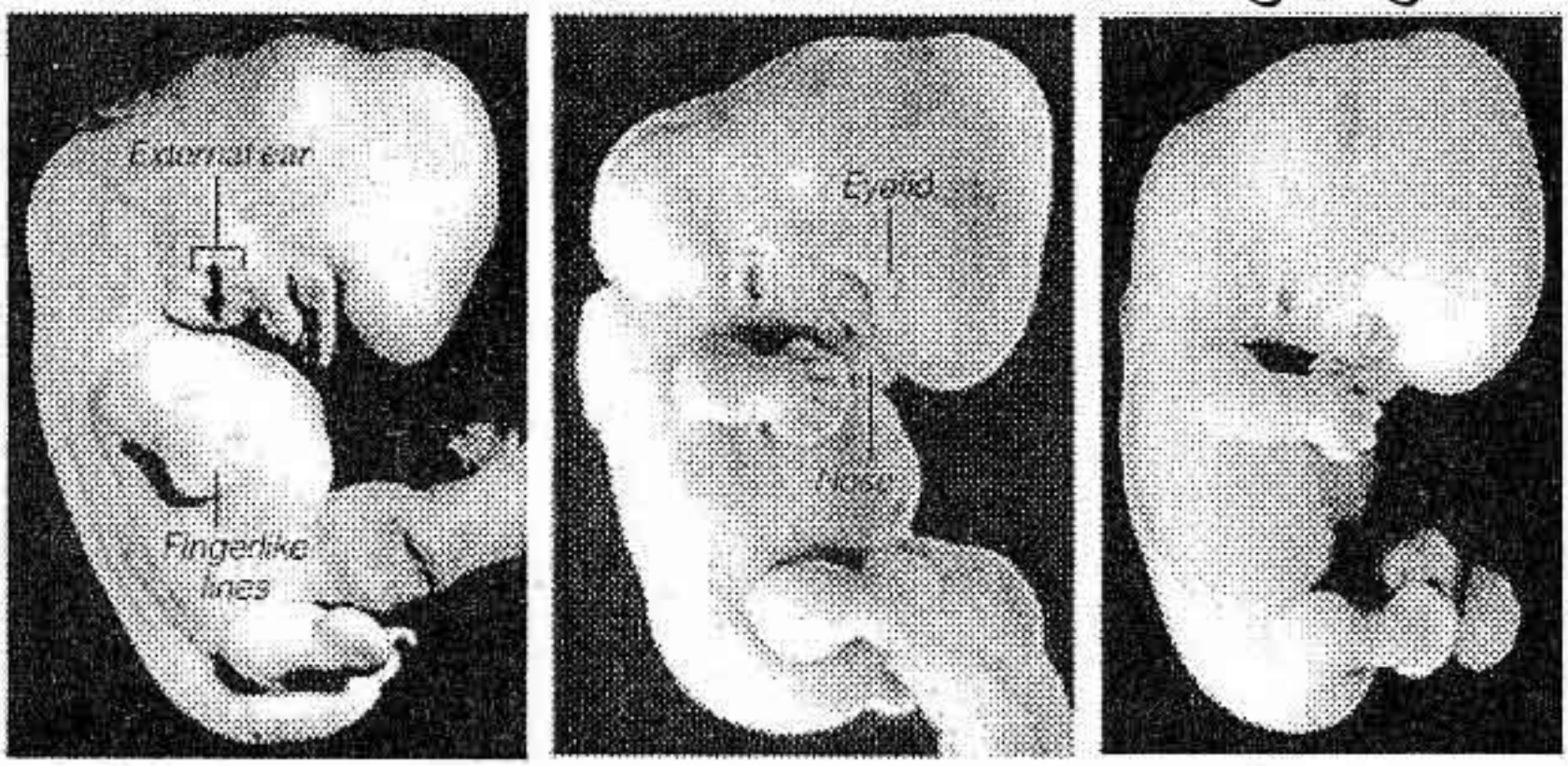

आँखों में लेंस, साथ ही दीदे के अंदर का पर्दा (Retina) तय्यार होता है। इस पर हर चीज़ों का अक्स बनता है। बड़ी बड़ी गोश्त की बोटीयां बनती हैं जैसे हाथ और पैर की (Mejor Muscles) और साथ ही इन में हरकत पैदा होती है और बच्चा अपना खून का ग्रूप (Blood Group) तय्यार करता है जो अक्सर व बेशतर माँ के ग्रूप से जुदा होता है।

आठवाँ और नव्वाँ हफ्ता

अब इस बच्चे की लम्बाई आधा इंच (Half Inch) है और एक पतली सी झिल्ली थैली नुमा बच्चेदानी के अंदर होती है। इस थैली में पानी की तरह एक माय (Amnionic Fluid) होता है जो बच्चे की हिफाज़त करता है। अब इसके हाथ और पैर बढ़ने लगते हैं। अभी हाथ और पैर की उँगलियाँ तय्यार नहीं हुई हैं। कुछ दिनों बाद तय्यार होंगी।

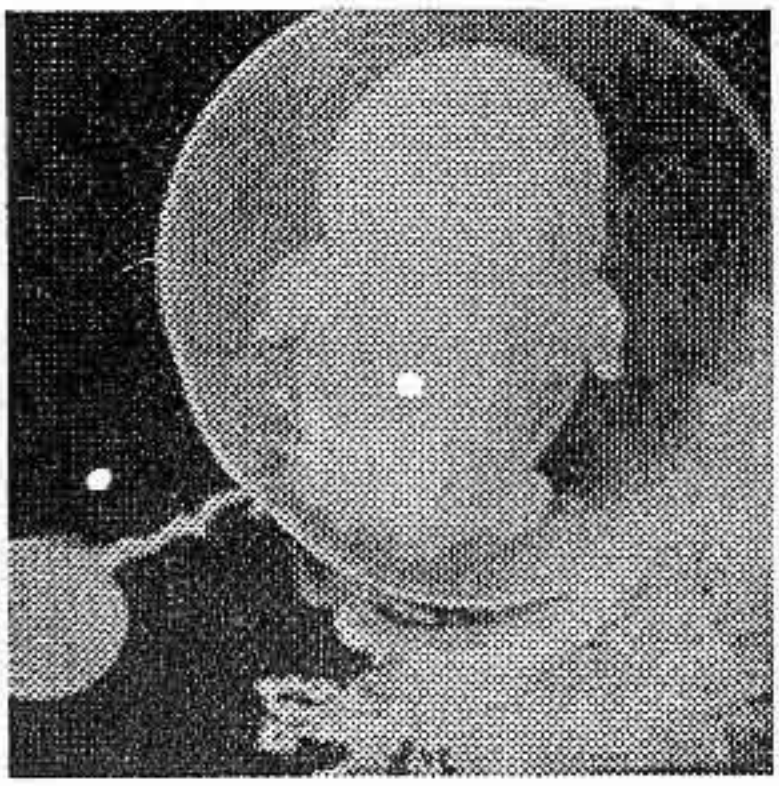

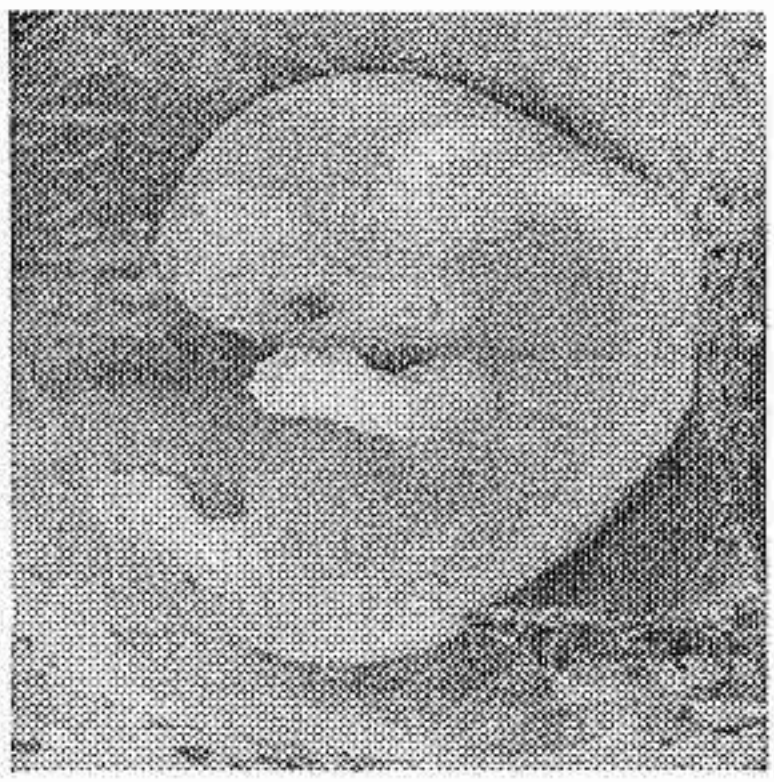

فِیْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ (Three Veils Of Darkness)

يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًامِنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ

तर्जुमा : तुम्हें तुम्हारी माँओ के पेट में बनाता है एक तरहा के बाद और तरह तीन अधेंरियों में। (सूरह ज़मर, आयत : 6)

(۱) ظلمة البطن Anterior abdominal wall of the mother

(۲) ظلمته الرحم The uterine wall

(۳) ظلمة المشيمه The amino-chorionic membrance

المشيمه भमाने बच्चेदानी यानी वह रकीक चमड़ा जो बच्चे के ऊपर होता है या इस से मन्दरज़ा ज़ेल तीन जुलमात मुराद हैं।

(1) जुलमातुलसुल्ब (2) जुलमातुलबतन (3) जुलमातुलरहम

और तसव्वुफ की इस्तेलाह में इन्सान इन तीनों जुलमात में घिरा हुआ है।

(1) जुलमातुलजसद (2) जुलमातुलतबियत (3) जुलमातुलनफस

जैसे बच्चा विलादत के वक़्त जुलमाते मज़कूरा से निकल कर आलमे मलक व शहादत की तरफ आता है ऐसे ही सालिके राहे हक विलादते सानिया में

जुलमाते मज़कूरा मसतूरा जुलमात से निकल कर आलमे मलकूत के नूर की तरफ आता है और आलमे ग़ैब मुक़ामे कल्ब व रूह में है।

दसवें हफ्ते में

وَهُوَ الَّذِىٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ قَلِيْلاً مَّا تَشْكُرُوْنَ .

तर्जुमा ः वह अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल पैदा किए मगर तुम बहुत कम शुक्र करते हो।

(सूरह मोमिनून, आयत ः 78)

وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ قَلِيْلاً مَّا تَشْكُرُوْنَ

तर्जुमा ः और कान आँखें और दिल अता फरमाए मगर तुम बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।

(सूरह सजदा, आयत ः 9)

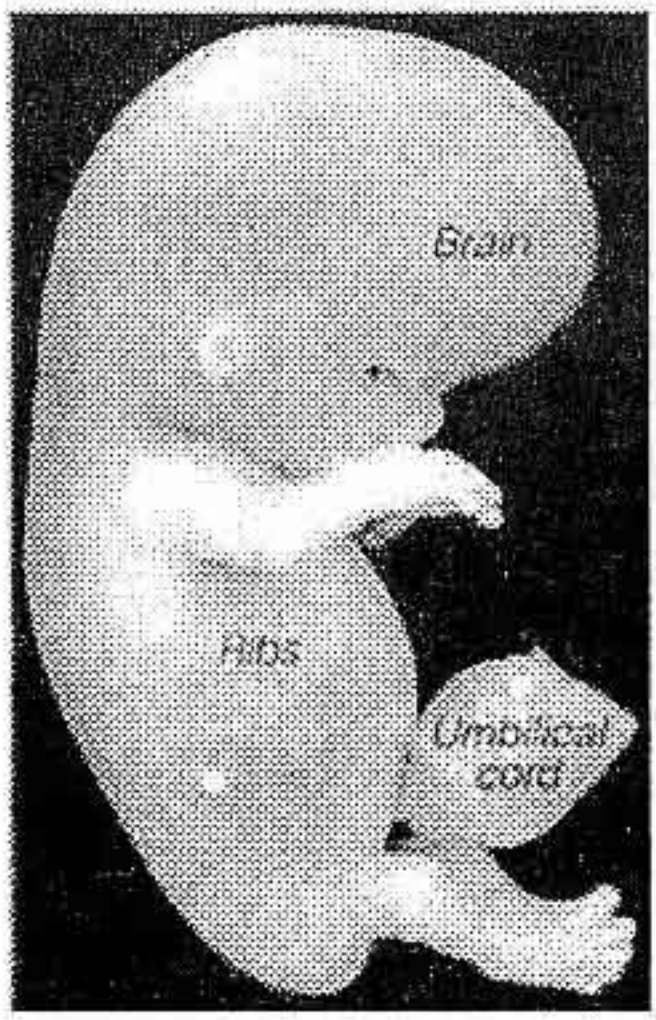

अब इस मुकाम पर इस बच्चे का दिल तय्यार हो चुका है और यह नौमोलूद बच्चे की तरहा दिख रहा है।

ग्यारहवें हफ्त में

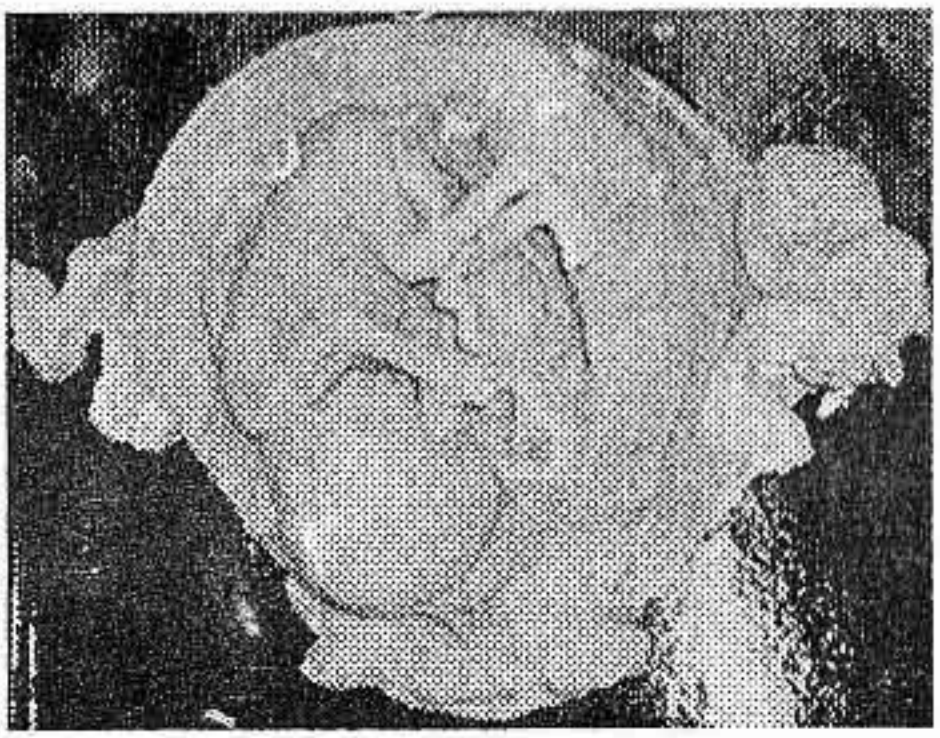

फिलवक़्त फेफड़े (Lungs) अपने काम के लिए ना मुकम्मल हैं। इसे हर चीज़ एक नली (Placenta) के ज़रिए मुहय्या कराई जा रही हैं। वह इसके खून को फेफड़ों तक जाने नहीं देता इस के लिए इस के पास एक बाइपास वॉल (By Pass Valve) है और साथ ही इस के बीस नन्हे नन्हे दांत मसूड़ो के अंदर तय्यार हो रहे हैं।

बारहवें हफ्त में

خَلَقَ الْاِنْسَانَ . عَلَّمَهُ الْبَيَانَ .

तर्जुमा : उसी ने इन्सान को पैदा किया और इसे बोलना सिखाया।
(सूरह रहमान, आयत : 3-4)

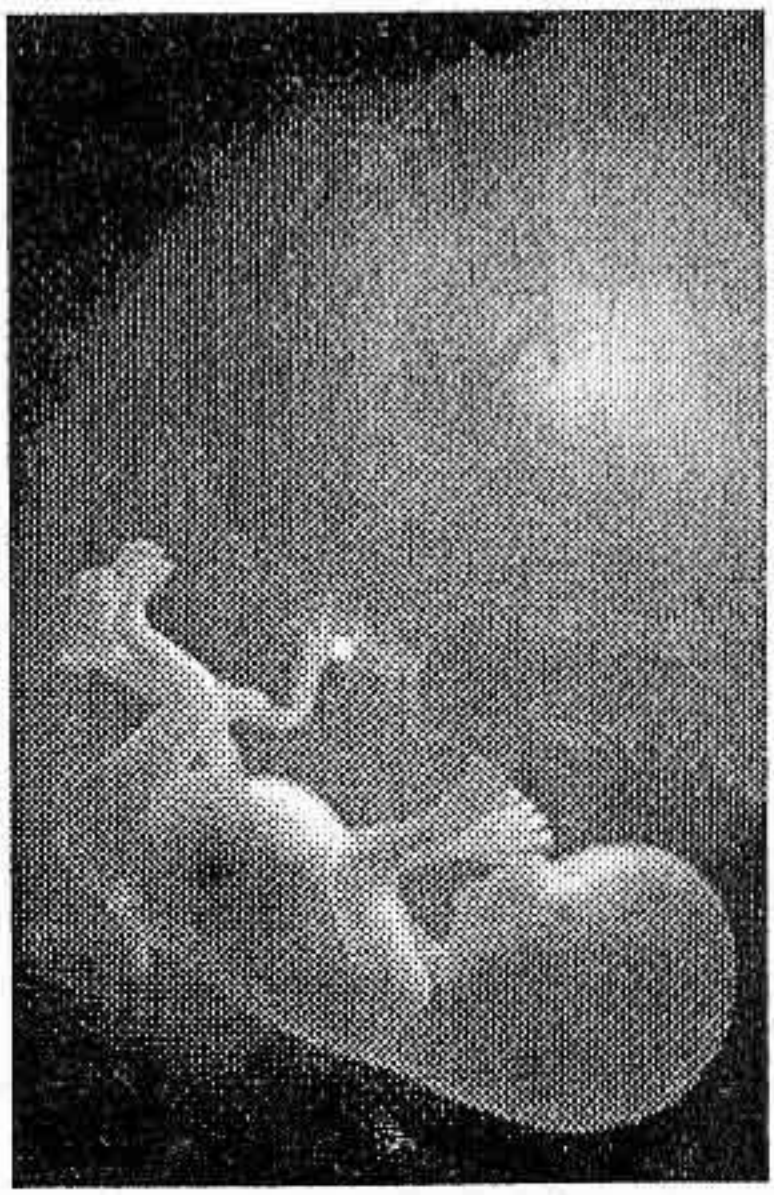

अब आवाज़ की तार (Vocal Cord) तय्यार हो चुकी है और वह बच्चा कभी कभी चुप चाप रो भी सकता है। उसका दिमाग़ पूरी तरह

से मुकम्मल हो चुका है और इसे दर्द का अहसास होता है। अब यह बढ़ता हुआ बच्चा अपना अंगूठा भी चूस सकता है। इस की अब आँखों की पलकें तय्यार हो चुकी हैं लेकिन यह सातवें महीने तक बंद रहती हैं ताके आँखों के अंदर मौजूद नाजुक और अहम आज़ाओं (Optical Nervefibre) को बचाया जा सके।

चौदवें हफ्ते में

अब जिस्म का गोश्त लम्बा हो रहा है और सभी तरतीब वार अपनी जगह पर काम कर रहे हैं। बच्चे के हाथ पैर मारने का दर्द अब माँ को महसूस होने लगता है।

पंद्राहवें हफ्त में

अब इस बच्चे में बड़ों की तरह चखने की कुव्वत (Taste Buds) इस क़ाबिल हो चुकी है के वह माँ के खाए हुए खाने का मज़ा चख सकता है।

हिदायत : अक्सर वालदैन को यह शिकायत होती है के उनका बच्चा बे अदबी व गाली, बद अख़लाकी व बद फेली में सरगर्दा रहता है जिसकी वजह यह है के औरतें बाज़ार में सौदा लेते वक़्त एक दाना उठा लिया और मुँह में डाला, यह दाना बग़ैर इजाज़त की वजह से हराम हो जाता है इस लिए ख़याल रखें खुसुसन दौराने हमल में कोई गिज़ा इस तरह की ना खाएँ जिस का नतीजा बुरा हो। क्यूँके माँ की ग़िजा ही बच्चे की खुराक बनती है। और यही ज़िम्मेदारी मर्द पर भी आयद होती है के वह जाएज़ ग़िज़ा खाए और खिलाए।

सोलहवें हफ्त में

इस वक़्त इसकी लम्बाई साढ़े पाँच इंच (5 ½ Inch) है और इस का

वज़न लगभग छ ऑन्स (6 Ounce) है।

6 Ounce = 170.40 grams

इसकी भवें (Eye Brows) पलक के बाल (Eye Lashes) और नन्हे नन्हे बाल सर पर आ जाते हैं जिसे वह अपने हाथों से पकड़ भी सकता है। यह पैर मारना और घूमना शुरू कर देता है।

बीसवें हफ्ते में

इसके नाखून और उँगलियों के निशान ज़ाहिर होने लगते हैं। इसकी शर्मगाह चाहे मोअन्नस (XX) हो या मुज़क्कर (XY) दिखने लगती है। जिसे अल्ट्रासोनोग्राफी के ज़रिए देखा जा सकता है।

وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى . مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى

तर्जुमा : और यह के उसी ने दो जोड़े बनाए नर और मादा नुतफा से डाला जाए। (सूरह नजम, आयत : 45-46)

मर्द के 46 क्रोमोज़ोम में से सिर्फ 23 क्रोमोज़ोम और औरत के 46 क्रोमोज़ोम में से भी सिर्फ 23 क्रोमोज़ोम मिल कर यह अपनी तादाद फिर 46 बना लेते हैं जिन में से मर्द के 23 क्रोमोज़ोम में एक जोड़ा नर (Y) और मादा (X) का होता है। सब में पहले यह उक़दा कुशाई कुर्आन मजीद ने ही की के मर्द ही के पास वह कुव्वत है जिस से लड़का या लड़की पैदा हो। क्यूँके औरत के पास वह माद्दा नहीं जिस से लड़का या लड़की पैदा कर सके। आज भी कुछ लोग जहालत की वजह से औरत को ही कुसूरवार मानते हैं।

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَاتَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا نَغِيضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ.

तर्जुमा : अल्लाह जानता है जो कुछ किसी मादा (औरत) के पेट में है। और पेट जो कुछ घटते बढ़ते हैं। (सूरह रअद, आयत : 8)

नुक्ता ः अल्लाह तआला ने सूरह रअद की आयतों में अपने आलेमुल-ग़ैब होने का पुख़ता सबूत दे रहा है। आज की मौजूदा तरक़्क़ी याफ्ता सायंस ने भी यह बात तसलीम कर चुकी है के माँ के पेट में क्या है? इसकी ख़बर अल्लाह बेहतर जानता है।

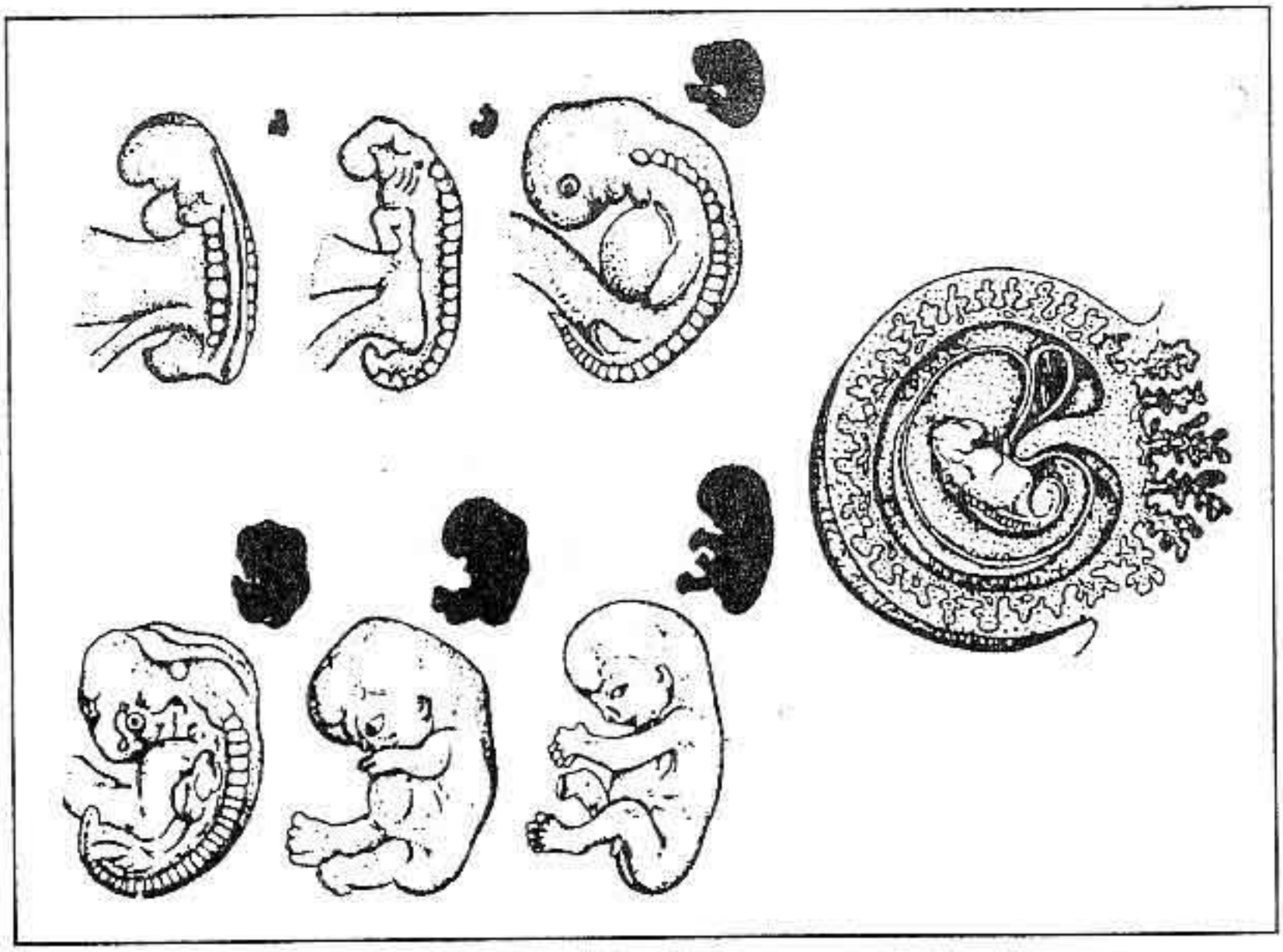

(1) आदमी के ज़कर (आलाए तनासुल) में से करोड़ो स्पर्म (Sperm) निकलते हैं मगर यह कोई नहीं बता सकता के वह एक कौन सा स्पर्म है जो फर्टीलाइज़ेशन में हिस्सा लेगा या यूँ समझो के कौन सा स्पर्म करारे मकीन होगा।

(2) इसी तरह औरत के हज़ारों अंडों में से कौन सा अंडा कामयाब होगा।

(3) माँ के रहम में नर है या मादा इसकी ख़बर 12 से 20 हफ्तों में अट्रासोनोग्राफी से मालूम होती है। इसका मतलब यह है के इस से कब्ल अल्ट्रासोनोग्राफी भी ना काम है।

(4) अब इस में क्या घट रहा है जैसे करोड़ों स्पर्म में से एक स्पर्म मुकाम पाता है इसके माने यह है के कुछ घट रहा है।

(5) माँ के रहम में एक औलाद है या दो, अगर दो है तो बढ़ रहा है।

(6) यह कामिल है या नाकिस, यह हसीन है या कबीह, यह छोटे क़द का है या लम्बे क़द का, यह नेक है या बद, यह औलिया अल्लाह है या अदु अल्लाह, यह सख़ी है या बख़ील, यह आलिम है या जाहिल, यह आकिल है या बेवक़ूफ, यह करीम है या लईम, खुश अख़लाक है या वद अख़लाक, यह तवील उम्र है या कम उम्र।

(7) यह कब पैदा होगा, 7 महीने में, 8 महीने में या 9 महीने में या 10 महीने में।

बाइसवें हफ्ते में

अब इस में सुनने की कुव्वत पैदा हो चुकी है और यह माँ की आवाज़ को पहचान सकता है।

فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا तर्जुमा : और हमने उसे सुनना देखना अता किया।
(सूरह दहर, आयत : 2)

हिकायत : सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी ग़ौसे आज़म समदानी र.अ. के नाना हज़रत अब्दुल्लाह र.अ. ने आपको मदरसे में दाख़िल किया। जब उस्ताद ने कहा ऐ अब्दुल क़ादिर पढ़ो, आपने अठाराह पारे तक पढ़ दिया। उस्ताद ने पूछा यह अठाराह पारे आपने कौन से मदरसे में हिफ्ज़ किए? सरकारे ग़ौसे आज़म र.अ. ने कहा शिकमे मादर में क्यूँके मेरी वालिदा माजिदा अठाराह पारे की हाफिज़ा हैं। जब मेरी वालिदा कुर्आन मजीद की तिलावत करती थीं मैं शिकमे मादर में सुनता था।

नुक़्ता : पहले यह बात नामुम्किन व अजीब सी मालूम होती थी मगर अब जदीद सायंस ने यह बात वाज़ेह कर दिया के बच्चा माँ के पेट में माँ की आवाज़ सुन सकता है। इस लिए माँओ को चाहिए के कुर्आन मजीद की तिलावत व ज़िक्र में मशगूल रहें ताके होने वाला बच्चा हाफिज़ व ज़ाकिर पैदा हो।

चौबीसवें हफ्ते में

अब यह बच्चे का जिस्म अच्छे मुलायम बालों से भर जाता है। इसकी नाज़ुक जिल्द को मोम की परत हिफाज़त देती है। अब यह बच्चा साँस लेने की जिद्दो जहद करता है। यह अपने अतराफ में फैले हुए पानी (Amnionic Fluid) को फेफड़े में ले लेता है।

तीसवें हफ्ते में

कई महीनों तक नाफ (Umbilical Cord) ही इस बच्चे की ज़िंदगी की डोर (Life Line) रहती है। नाफ में '3' अलग अलग तरह के ट्यूब होते हैं जो के माँ और इसके बच्चे में ताल्लुक रखते हैं। इन में से एक ट्यूब ग़िज़ाइयात और ऑक्सीजन (हवा) देता है और दो ट्यूब बच्चे के फासिद माद्दे को बाहर निकालता है।

बत्तीसवें हफ्ते में

अब यह बच्चा पूरी तरह से तय्यार हो चुका है। यह दिन में **90** से **95** फी सद सोता रहता है जैसे वह कोई मीठा ख़्वाब देख रहा है।

فِیۡۤ اَیِّ صُوۡرَۃٍ مَّا شَآءَ رَکَّبَکَ तर्जुमा : जिस सूरत में चाहा तुझे तरतीब दिया। (सूरह इनफेतार, आयत : **8**)

यानी अल्लाह बच्चे को जिसके चाहे मुशाबे बनादे। बाप के, माँ के, या मामू और चचा के। दूसरा मतलब यह है के वह जिस शकल में चाहे ढाल दे, हत्ता के क़बीह तरीन जानवर के शकल में भी पैदा कर सकता है लेकिन यह उसका लुत्फ व करम और मेहरबानी है के वह ऐसा नहीं करता

और बहतरीन इन्सानी शकल में ही पैदा फरमाता है।

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ तर्जुमा : और तहकीक पैदा किया हमने तुम को फिर सूरत बनाई हमने तुम्हारी। (सूरह एराफ, आयत : 11)

وَ صَوَّرَ كُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَ كُمْ तर्जुमा : और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी अच्छी सूरत बनाई। (सूरह तग़ाबुन, आयत : 3)

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ اَحْسَنِ تَقْوِیْمٍ. तर्जुमा : यकीनन हमने इन्सान को बहतरीन सूरत में पैदा किया। (सूरह तीन, आयत : 4)

अल्लाह तआला ने हर मख़्लूक़ को इस तरह पैदा फरमाया के उसका मुँह नीचे को झुका हुआ है सिर्फ इन्सान को दराज़ कामत, सीधा बनाया जो अपने हाथों से खाता पीता है फिर इसके आज़ा को निहायत तनासुब के साथ बनाया इनमें जानवरों की तरह बेढंगापन नहीं है। हर अहम उजू दो दो बनाए, इनमें निहायत मुनासिब फासला रखा। फिर इसमें अकल व फहम तदबीर व हिकमत और समआ व बसर की कुव्वतें वदिअत कीं, दर असल इन्सान अल्लाह का मज़हर और परतू है।

اَلَّذِیْ اَحْسَنَ كُلَّ شَیْءٍ तर्जुमा : वह जिसने जो चीज़ बनाई खूब बनाई। (सूरह सजदा, आयत : 7)

छत्तीसवें हफ्ते में

इस बच्चे का अब वज़न 3 या साढे 3 किलो के लग भग है। अव यह माँ के रेहम से बाहर आकर दुनियावी ज़िंदगी जीने के लिए पूरी तरह तय्यार है।

وَنُقِرُّفِیْ الْاَرْحَامِ مَانَشَآءُ اِلٰی اَجَلٍ مُّسَمًّی ۔

तर्जुमा : और हम ठहराए रखते हैं माँओ के पेट में जिसे चाहे एक मुकर्रर मिआद तक।

(सूरह हज, आयत : 5)

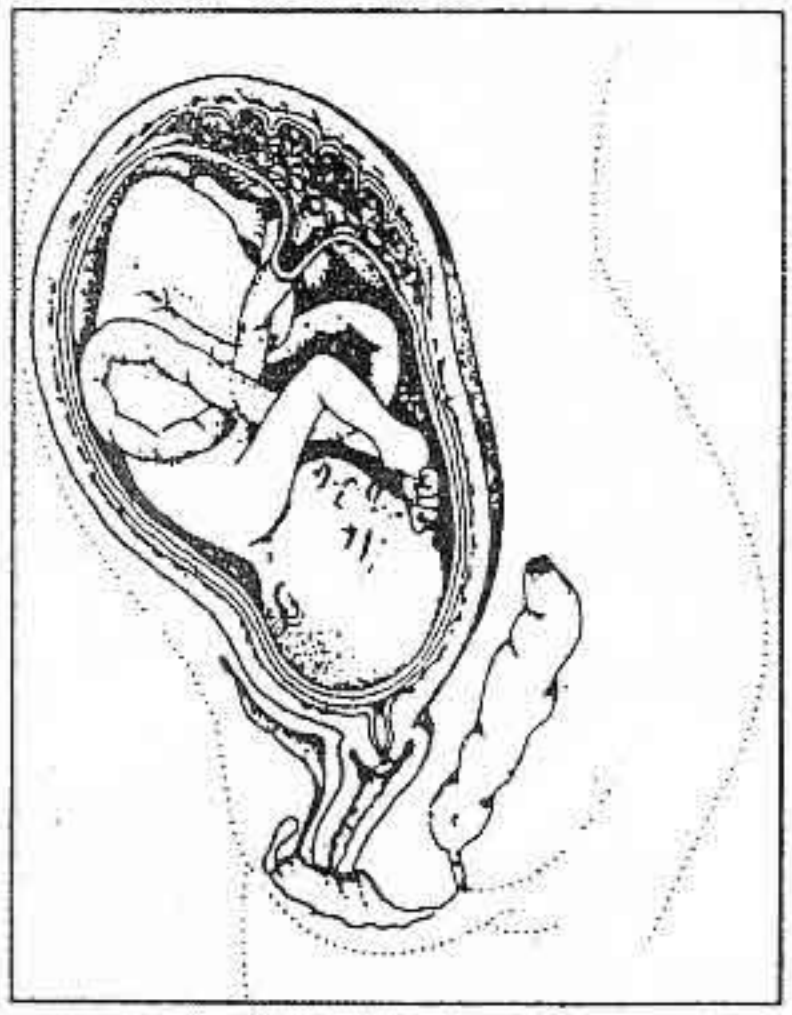

पेट में बच्चे के ठहरने की मुद्दत

बच्चे की माँ के पेट के अंदर ठहरने की मुद्दत में भी फुक़्हाहे कराम का इख़्तेलाफ है। इसकी अदना मुद्दत 6 माह है। इस इब्तेदाई मुद्दत में तो तमाम फुक़्हाहे कराम र.अ. मुत्तफिक हैं, इसके आगे इख़्तेलाफ है। बाज़ के नज़्दीक बच्चा माँ के पेट के अंदर नौ माह ठहरता है। बाज़ के नज़दीक यूँ है के बच्चा माँ के पेट में ज़्यादा से ज़्यादा दो साल ठहर सकता है। यही इमाम अबू हनीफा र.अ. फरमाते हैं। इमाम शाफई र.अ के नज़्दीक चार साल और इमाम मालिक र.अ. के नज़्दीक पाँच साल तक बच्चा माँ के पेट में ठहर सकता है।

अजूबे

☆ हज़रत जहाक बिन मुज़ाहिम ताबई माँ के पेट में दो साल ठहरे।

☆ हज़रत इमाम मालिक र.अ. तीन साल ठहरे।

(कदाफिल-मुहाज़रात लिससुयूती)

इमाम मालिक र.अ. ने फरमाया के इनकी हमसाया औरत ने 12 साल में तीन बच्चे जने जिन में से हर एक माँ के पेट में चार साल ठहरता था।

हज़रत हरम हब्बान र.अ. भी माँ के पेट के अंदर चार साल ठहरे रहे। इसी लिए उनका नाम हरम (बूढ़ा) रखा गया।

कायदा ः हज़रत हसन र.अ. से मरवी है के 'عَيَوُضُ' उस वक़्त बोलते हैं जब बच्चा 8 या 8से कम माह माँ के पेट में ठहरे और 'اَزْدِيَادُ' वह जो 9 माह या इस से ज़ायद अर्सा ठहरे। उन्होंने यह भी फरमाया के जो बच्चा वक़्त से पहले गिर जाए उसके लिए 'عَيَوُضُ' इस्तेमाल होता है और जो पूरे माह करके पैदा हुआ उसके लिए 'اَزْدِيَادُ' इस्तेमाल होता है।

कायदा सीरते नबवी स.अ.व. ः हुजूर सरवरे आलम स.अ.व. के मुताल्लिक़ सीरत निगारों का इख़्तेलाफ है। बाज़ कायल हैं के हुजूर स.अ.व. अपनी वालिदा माजिदा के शिकमे अतहर में नौ माह जलवा अफरोज़ रहे, बाज़ कहते हैं दस माह, बाज़ के नज़्दीक 6 माह, बाज़ 7 के कायल हैं और बाज़ 8 माह के।

मोअजज़ा ः अगर आठ माह वाला क़ौल सही मान लिया जाए तो यह आप का मोअजज़ा समझा जाएगा क्यूँके अतिब्बा और नजूमी कहते हैं के जो बच्चा आठ माह में पैदा हो वह जल्द फौत हो जाता है। लेकिन हमारे नबीए करीम स.अ.व. का ज़हूर आठ माह में हुआ। ताहम आप ज़िंदा रहे (और ता कयामत ज़िंदा रहेंगे) (कज़ाफी इन्सानुल-उलून)

फ ः अतिब्बा और नजूमी कहते हैं के जो बच्चा 6 ,7,या 9 माह के बाद पैदा हो तो वह ज़िंदा सलामत रह सकता है।

फ ः हज़रत ईसा अ.स. के लिए भी बाज़ रिवायात में आया है के वह भी 8 माह के बाद पैदा हुए।

नुक्ता तिब्बिया ः अतिब्बा व हुकमा कहते हैं के बच्चा 6 माह के बाद मामूली हरकत करके रूक जाता है, फिर सातवें माह के बाद पहली से ज़्यादा हरकत करता है। अगर इस हरकत से माँ के पेट से बाहर आ गया तो ज़िंदा रह कर तबई मौत फौत होता है, अगर सातवें माह के बाद माँ के शिकम से ना निकले तो फिर माँ के पेट के अंदर आराम से वक़्त गुज़ारता है। आठवें महीने में बाहर निकलने के लिए किसी किस्म की हरकत नहीं करता। यही वजह है के माँ के पेट के अंदर इस माह में बच्चे की हरकत बहुत थोड़ी महसूस होती है। अगर इसके बावजूद आठवें माह में माँ के पेट से बाहर भी आ जाए तो निहायत ही कमज़ोर होगा। अव्वलन उसका ज़िंदा रहना दुश्वार होगा, अगर ज़िंदा रहेगा तो बिलकुल काल्मियत फिर चंद रोज़ के बाद फौत हो जाएगा। इस लिए के खुद ज़ईफ था और दो हरकतों (6 और 7 माह वाली) ने उसे और कमज़ोर कर दिया। इनके सदमात की ताब ना ला कर मर जाता है।

कौल ः सय्यदना मुहयुद्दीन इब्ने अरबी र.अ. ने फरमाया के मैंने इलमे नुजूम में कोई ऐसी सूरत नहीं देखी जिस से साबित होता हो के 8 माह के बाद का बच्चा ज़िंदा रह सके, अगर ज़िंदगी के कुछ लमहात होंगे तो भी उसकी ज़िंदगी से उसकी मौत अच्छी। इस लिए के आठवें माह में पेट के अंदर बच्चे पर सर्दी और खुश्की का हमला होता है, अगर इसी असना में बाहर आ जाए तो मौत की सर्दी और खुश्की साथ लाएगा जिसे वह ज़िंदा नहीं छोड़ेगी। (तफसीर रूहुल-बयान,जिल्दः8, पाराः13, सफहाः189)

ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهُ तर्जुमा ः फिर इसे रास्ता आसान किया।
(सूरह अबस, आयत ः 20)

यहाँ भी इस आयत के दो मानी होते हैं। एक स्पर्म को शिकमे मादर में जाने के लिए रासता आसान किया और दूसरा इस तंग मुकाम से निकलने के लिए रास्ता आसान किया।

ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلاً तर्जुमा : फिर तुम्हें निकालते हैं बच्चा।
(सूरह हज, आयत : 5)

सवाल : अतफालन (اطفالاً) के बजाए तिफलन (طفلاً) क्यूँ कहा गया?
जवाब : यहाँ जिन्स वाके हुआ है जिस में एक भी मुराद हो सकता है और मुतअद्दी भी या كُلُ وَاحِدٌ مِنْهُمْ के माने हैं।
फ : हर वह बच्चा जो पैदाइश के बाद तक खाने पीने की कुदरत ना रख्खे उस वक़्त तक उसे तिफ्ल कहा जाएगा। (कज़ाफिल-मुफ्रदात)
फ : मौलाना फनारी र.अ. अलबारी ने तफसीरूल-फातेहा में लिखा के हर वह बच्चा जो पैदाइश के बाद चींख मारे और यहाँ तक के 6 साल का हो जाए उसे तिफ्ल कहा जाएगा।

हिदायत

इन सभी आज़ाओं व खुलियात का एक साथ तरतीब वार काम करना कोई इत्तेफाक नहीं है और यह अपना काम बखूबी बग़ैर किसी ग़लती के सर अंजाम देते हैं। हर उस शख़्स के अंदर जो इस रूए ज़मीं पर कभी आया और जो भी कुव्वत और ज़हानत व सलाहियत इसके पास है वह खुदा की बख़शी हुई है।

अहम नुक्ता : इन्सानी जिस्म तीन हज़ार करोड़ खुलियात का मजमुआ है और हर खुलिया में 99.99 फी सद जगह ख़ाली होती है। इस हिसाब से अगर इन्सानी जिस्म में तमाम ख़ाली जगह (Space) निकाली जाए तो बाक़ी मांदा की बिसात बस एक ग़ैर मुरई (ना दिखाई देने वाला) नुक़्ता सी रह जाएगी। इसके माने यह हुए इन्सान इब्तेदा में भी एक नुक़्ता था और अब भी एक नुक़्ता है। जिस तरह सियाही की एक बूंद बढ़ कर एक इन्सानी तसवीरें बन जाती हैं। इसी लिए हज़रत अली र.अ. फरमाते हैं انا نقطه باء यानी मैं (ب) का नुक़्ता हूँ।

يَا يُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَ خَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهَارِجَالًا كَثِيرًا وَّ نِسَآءً

तर्जुमा : ऐ लोगो अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और इसी में से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द व औरत फैला दिए। (सूरह अलनिसा, आयत :1)

दूध की मुद्दत

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَ هُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَاَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ.

तर्जुमा : माँयें अपनी औलाद को कामिल दूध पिलाए जिनका इरादा दूध पिलाने की मुद्दत बिलकुल पूरी करने का हो।

(सूरह बकरा, आयत : 233)

وَوَ صَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ اُمُّه‘ وَهْناً عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُه‘ فِىْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْلِىْ وَلِوَالِدَيْكَ اِلَىَّ الْمَصِيْرُ

तर्जुमा : उसकी माँ ने दुख पर दुख उठाकर इसे हमल में रखा और उसकी दूध छुड़ाई दो बरस में है। (सूरह लुकमान, आयत : 14)

وَوَ صَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰناً حَمَلَتْهُ اُمُّه‘ كُرْهًا وَ حَمْلُه‘ وَ فِصٰلُه‘ ثَلٰثُونَ شَهْرًا حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّه‘ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِىْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِىْ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ وَ عَلٰى وَالِدَىَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَ اَصْلِحْ لِىْ فِىْ ذُرِّيَّتِىْ اِنِّىْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَ اِنِّىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ.

तर्जुमा : और हमने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक करने का

हुक्म दिया। उसकी माँ ने उसे तकलीफ झेल कर पेट में रखा और तकलीफ बरदाश्त करके उसे जना उसके हमल का और उसके दूध छुड़ाने का ज़माना तीस महीने का है। यहाँ तक के वह अपनी पुख़तगी और चालीस साल की उम्र को पहुँचा तो कहने लगा! ऐ मेरे परवरदिगार ! तू मुझे तौफीक दे के मैं तेरी इस नेअमत का शुक्र बजा लाऊँ जो तू ने मुझपर और मेरे माँ बाप पर इनाम की है और यह के मैं ऐसे नेक अमल करूँ जिनसे तू खुश हो जाए और तू मेरी औलाद भी सॉलेह बना मैं तेरी तरफ रूजू करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ। (सूरह ऐहकाफ, आयत : 15)

बाज़ सहाबा कराम ने इसतिदलाल किया है के कम अज़ कम मुद्दते हमल 6 महीने के बाद किसी औरत के यहाँ बच्चा पैदा हो जाए तो वह बच्चा हलाल ही का होगा हराम का नहीं। इस लिए कुर्आन में रज़ाअत दो साल (24 महीने) बताई है।

इमाम अबू युसुफ व इमाम मोहम्मद र.अ. का कौल है के रज़ा की मुद्दत ढाई साल होती है। (तफसीर ख़ज़ाएनुल-इर्फान)

तफसीर अहमदी ख़ाज़न में है के दो साल की मुद्दत पूरा करना लाज़िम नहीं अगर बच्चे को ज़रूरत ना रहे और छुड़ाने में उसके लिए ख़तरा ना हो तो इस से कम मुद्दत में भी छुड़ाना जायज़ है।

तिरमिज़ी शरीफ में उम्मे सलमा र.अ. से मरफूअन रिवायत है ! वही रज़ा (दूध पिलाना) हुर्मत साबित करता है जो छाती से निकल कर आंतों को फाड़े और यह दूध छुड़ाने (की मुद्दत) से पहले हो।

दर असल बच्चे की असल ग़िज़ा दूध है। बच्चे का मेदा कमज़ोर होता है जिसके मद्दे नज़र दूध को बच्चे की ग़िज़ा बनाई गई क्यूँके दूध माय की

शक़ल में सब में जल्द हज़म होने वाली ग़िज़ा है जिस से बच्चे का पेट भी भर जाता है और कुव्वत भी मिलती है। नेज़ दूध में केलशियम होता है जिससे बच्चे की हड्डीयाँ मज़बूत होती हैं जिस के लिए दो साल का अरसा काफी है।

रूबूबियत ः अल्लाह तआला बच्चे की पैदाइश से क़ब्ल ही माँ के थनों में दूध अता करता है। बच्चे के पैदाइश के बाद जब माँ का दूध पीता है तो दूध बच्चे के मेदे के मुताबिक होता है यानी शक्कर, फैट व दीगर चीज़ें बराबर मिक़्दार में मिली हुई होती हैं । इसी लिए तमाम डॉकटरों व हकीमों का कौल है के बच्चे के लिए माँ के दूध से बेहतर कुछ भी नहीं। हत्ता के दूध के डिब्बों पर भी यह जुम्ला दर्ज होता है।

बच्चे के जिस्म की अंदरूनी हिफाज़त के लिए हिफाज़ती खुलियात माँ के दूध से मुहय्या होते हैं।

बुजुर्गों का कौल है के चालीस साल तक माँ के दूध का असर रहता है जिसके बाद जिस्म में फिर कमज़ोरी व बुढ़ापा घर करने लगता है।

शुग़ले मजमुआ

बच्चा पैदा होते वक़्त शुग़ले मजमुआ में रहता है यानी उसके मुकाबिल उसके जैसी एक सूरत रहती है उससे लिपटने के लिए जुम्बिश करता है तो उसको पकड़ने के लिए बाहर गिर पड़ता है।

इन्सानी आज़ा के अजाएबात

☆ एक खुलिये के DNA में 206 हड्डीयों, 600 गोश्त, 10000 सुनने का नेटवर्क (Network) 2 अरब देखने का नेटवर्क, 100 दिमाग़ के खुलियात और 100 खरब खुलियात का नक़्शा (Design) मौजूद है।

☆ एक खरब खुलियात के मरकज़ से इन्सानी जिस्म ज़हूर पज़ीर होता है जिस में इतनी जगह होती है के 900 ज़ख़ीम किताबें आ जाएँ।

☆ हर लाल खुलिये (Red Cell) में 300 अरब हीमोग्लोबीन के अजज़ा होते हैं। जब हम ऑक्सीजन अंदर लेते हैं तो 300 अरब खानों (फेफड़ों के) में भर जाता है।

☆ अगर पानी थोड़ा सा और गाड़ा होता तो हमारे जिस्म में दौराने खून में मुश्किलें पैदा होतीं।

☆ बच्चे के जिस्म की अंदरूनी हिफाज़त के लिए हिफाज़ती खुलियात माँ के दूध से मुहय्या होते हैं।

☆ एक इन्सानी दिमाग़ 4.5 अरब ट्रांजिस्टर जो के एक मॉर्डन प्रोसेसर पर काम करने के बराबर है।

☆ इन्सानी गुर्दे दिन भर में **140** लीटर खून छानते है। यह छानने का अमल वह एक अरब छोटी छोटी छन्नी से करते हैं।

☆ लाल खुलियात की ज़िंदगी **120** दिन की होती है।

☆ नाक की हड्डी इस तरह से बनाई गई है के हवा जो हम अंदर लेते हैं वह कई बार इस में घूमें और गरम हो कर अंदर जाए।

☆ एक छोटी सी मुसकुराहट के लिए **17** गोश्त के हिस्सों को एक साथ काम करना पड़ता है।

☆ जिगर का एक खुलिया ऐसी ख़ासियत रखता है के वह अकेले **500** फराएज़ अंजाम दे सकता है।

☆ एक आम आदमी के जिस्म में लगभग **5** खरब रगें होती हैं जिनकी कुल लम्बाई सीधा रखने पर **950** किलो मीटर होती है।

☆ इन्सानी जिस्म में दिल **100** खरब खुलियात को जोड़े रखता है।

☆ दिल एक दिन में **43000** लीटर खुन पम्प करता है।

मसलए इरतेक़ा व मौलाना रूम

दुनिया की मौजुदात को चार किस्मों पर तक़्सीम किया जाता है। जमादात, नबातात, हैवानात, इन्सान। अब इन में यह बहस है के आया ये चारों किस्में इब्तेदाए तख़्लीक से इसी तरह से मख़लूक़ हुई है या इब्तेदाए तख़्लीक में सिर्फ एक चीज़ पैदा की गई थी। फिर उसने तरक़्क़ी और इरतेक़ा किया है। वह चीज़ जमाद थी फिर तरक़्क़ी करके नबातात बनी फिर तरक़्क़ी करके हैवान बनी और फिर तरक़्क़ी करके इन्सान बन गई।

आज भी इन्सान इरतेकाई तग़ैयुरात का फलसफा जो यूरोप में काफी मक़्बूल है और 'चार्लस डार्विन' की अज़ीम तलाश तस्लीम किया जा रहा है। इस फलसफे को हमारे मौलाना बहरूलउलूम ने ही सब से पहले पेश

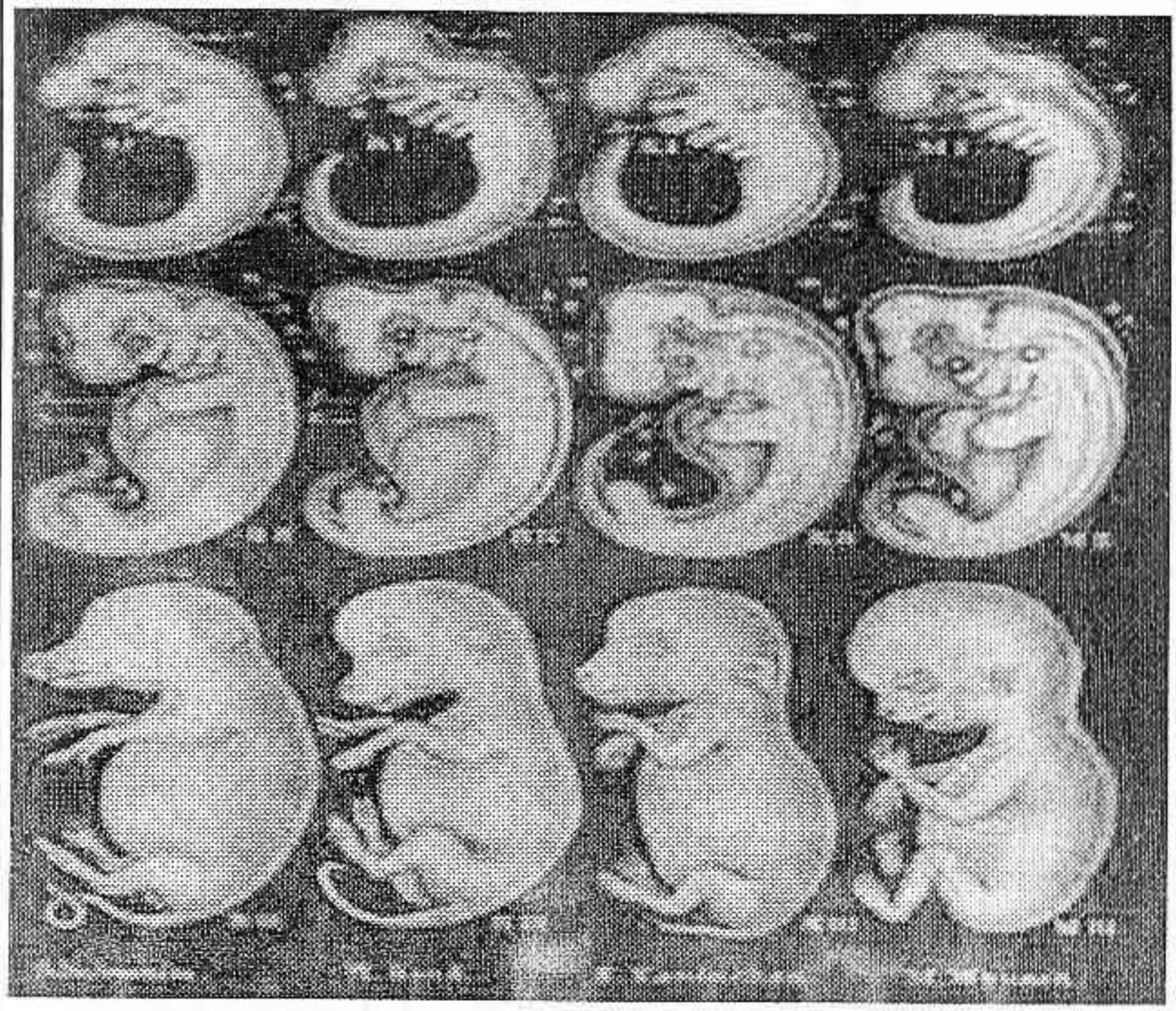

किया, फर्क सिर्फ यह है के मौलाना रूम का फलसफा इरतेकाए कुर्आन और अल्लाह की हिदायत के मुताबिक होते हुए ख़ालिस इस्लामी है और चार्लस डार्विन ने अल्लाह से रिश्ता मुन्कता करके मौलाना रूम से इस्तेफादा करके इसे ग़ैर इस्लामी बना दिया।

मौलाना रूम फरमाते हैं।

تو ازاں روزے کہ در ہست آمدی — آتشی یا خاک یا بادے بدی
گر براں حالت ترا بو دے بقا — کے رسیدے مرترا ایں ارتقا
از مبذل ہستی اول نماند — ہستی دیگر بجائے او نشاند
ہم چنیں تا صد ہزاراں ہستہا — بعد یک دیگر، دوم بہ زانبدا

(इन्सान अदम से वजूद में आया और बराबर तरक़्की करता आगे बढ़ता रहा और अब भी इसकी तरक़्कियों की इन्तेहा नहीं है। सबसे पहले अनसरी सूरत में वजूद में आया, यानी आग, ख़ाक और बाद की शकल में रहा और फिर उस अनसरी सूरत से तरक़्की करके आगे की सूरतें इख़्तियार किए और हर अगली सूरत पहली सूरत से अफज़ल और बरतर हुई।)

آمدہ اول بہ اقلیم جماد — وز جمادی در نباتی فتاد
سالہا اندر نباتی عمر کرد — و زنباتی یاد ناور داز نبرد
وزنباتی چوں بہ حیوانی فتاد — نامدش حالِ نباتی ہیچ یاد
بازار حیواں سو انسانیش — میکشد آں خالقے کی دانیش
ہمچنیں اقلیم تا اقلیم رفت — تاشد اکنوں عاقل ودانا وزفت

(इन्सान अनसरी सूरत के बाद तरकीब में कदम रखा और जमादाद की सूरत में तबदील हो कर नबातात की ग़िज़ा बना और नबातात में तबदील हुआ। नबातात हैवानात में तबदील हुए। फिर हैवान से इन्सान की जानिब, इसको वह खुदा ले जाता है जो इसको जानता है। इसी तरह वह एक आलम से दूसरे आलम की तरफ चलता रहा। यहाँ तक वह आकिल व दाना और फरबा बन गया।)

از جمادی مردم و نامی شدم ❀ وزنما مردم بحیواں سر زدم
مردم از حیوانی و آدم شدم ❀ پس چہ ترسم! کے زمردن کم شدم

(रेहमे मादर में नबातात की तरह तुख़्म ने जड़ पकड़ी और जिस तरह नबातात की नशो व नुमा होती है। नुतफा की नशो व नुमा शुरू हुई, हिस्स व हरकत पैदा हुई और हैवान की शकल इख़्तियार की फिर इन्सानी सूरत में पैदा हुआ।)

चार्लस डार्विन के जानवर की तरक़्की यहाँ से ख़तम हो जाती है लेकिन हमारे मौलाना बहरूलउलूम का इन्सान इसी तरह आगे भी तरक़्की कर रहा है। मौलाना फरमाते हैं।

جملہ دیگر بمیرم از بشر تا بر آرم از ملائک بال و پر

मौलाना फरमाते हैं के बशरी ज़िंदगी की मौत इसी तरह है जिस तरह गुज़िश्ता वजूद की मौतें हुई। यह मौतें दरअसल इसकी तरक़्की की मंज़िलें हैं। इस मौत से भी माद्दी जिस्म से भी ताल्लुक़ टूट जाता है और मलकूती दुनिया में इसकी तरक़्की शुरू हो जाती है। यहाँ की ज़िंदगी बिलकुल नए किस्म की है।

وز ملک ہم بایدم جستن زجو کل شئ ھالک الا وجھہ
باز دیگر از ملک قرباں شوم ❀ آنچہ اندر وہم ناید آں شدم

मौलाना फरमाते हैं । मौत के बाद इन्सान मलकूती दुनिया में कदम रखता है वहाँ भी इरतेकाई मंज़िल चलती रहती है। क्यूँके ज़ाते बारी के इलावा हर शए फानी है। लेकिन इसके बाद सूरतें ना काबिले तसव्वुर हैं। अपनी इस मंज़िल पर हम उस ज़िंदगी के बारे में नहीं सोच सकते थे।

बाज़ लोग मौलाना रूम की इस फिकर को जो शायराना अंदाज़ में बयान फरमाया है।

"अक़ीदए तनासुख" से जोड़ देते हैं और मौलाना रूम जैसे अज़ीम

मुफक्किर को ग़लत नज़र से देखते हैं। लेकिन मौलाना बहरूलउलूम का यह फलसफाए इरतेका इन्सानी कुर्आन की मनदर्जा आयत की तफसीर है।

فَلَا اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ وَ الَّيْلِ وَ مَا وَسَقَ . وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ . لَتَرْ كُبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ.

(पारा : 30, सूरह शक़्क़ाक़, आयत 19)

पस नहीं मैं क़सम खाता हूँ शफक की और रात की और जो कुछ वह समेट लेती है और चांद की जब के वह कामिल हो जाता है तुम को ज़रूर दर्जा बदर्जा एक हालत से दूसरी हालत की तरफ गुज़रते चले जाना है।

सांस की कसरत

कलमए तय्यब (لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ) कह कर गहरा सांस लें और फिर कलमए तय्यबा दो मरतबा दिल में दोहराने तक सांस को अंदर रोक कर रखें और फिर कलमए तय्यबा पढ़ते हुए सांस को बाहर करें फिर दोबारा एक मरतबा कलमए तय्यबा दिल में पढ़ने तक सांस को बाहर रोक कर रख्खें इस तरह जब आप सांस लेना बंद करते हैं तो इस दौरान फेफड़ों को आराम मिलता है और इन में फिर से तवानाई पैदा होती है। इस अमल को दिन में कई बार कर सकते हैं।

उम्र कैसे बढ़ाएँ

क़ौले नबी स.अ.व. है के इन्सान की सांसें गिन्ती की हैं। अगर हम ऑक्सीजन को फेफड़ों में ज़्यादा देर तक रोक सकें तो वह मुकम्मल तौर पर इस्तेमाल होती है। इससे खून और जिस्म को ज़्यादा तवानाई मिलती है। फिर इसके मानी यह हुए के हम रोज़ाना कम सांस लेंगे। बर्रे सग़ीर के क़दीम फलसफे की रू से हमारी उम्र का पैमाना सांसों के हिसाब से तय होता है।

मीनटों, दिनों और बरसों के हिसाब से नहीं। लिहाज़ा अगर इस तरह हम दिन में कम से कम तादाद में सांस लें तो उम्र बढ़ाई जा सकती है और ज़िंदगी तवील हो सकती है।

हमारे जिस्म की बर्क़ी रौ

हमारा जिस्म पाँच अनासिरों से बना है और बर्क़ी रौ इसको चलाती फआल रखती है। बर्क़ी रौ की दो अक़्साम बयान की गई हैं। मुसबत (+ve) और मनफी (-ve) यह बिजली हयातयाती बॅटरी से पैदा होती है यानी जब हम दायें नथने से सांस लेते हैं तो हमारे दिमाग़ में जाती है। दिमाग के (+ve) खुलियात सफेद ज़र्रात को दोबारा चार्ज करते हैं और दिमाग़ के पहले ग़ार में दाख़िल हो कर वहाँ गरमी (+ve)का ज़ख़ीरा करते हैं। जब यह ज़ख़ीरा मुकम्मल हो जाता है तो इसका बहाव (-ve)की तरफ हो जाता है। लिहाज़ा कुदरती तौर पर हम बायें नथने से सांस लेना शुरू कर देते हैं इस हवा से ताक़तवर हो जाने वाला खून दिमाग़ में दाख़िल हो कर (-ve)के भूरे अनासिर को रिचार्ज करता है जो मुकम्मल होते ही (+ve) की तरफ जाना शुरू कर देता है। इस तरह (+ve)और (-ve) की बाहमी तबदीलियों से बर्क़ी रौ पैदा होती है जो जिस्म में बहती रहती है। इस लिए दायें और बायें नथनों से सांस लेने के फेल में कुदरती तौर पर तबदीली होती रहती है। हमारे जिस्म में बिजली ग़ालिब है। मग़रिब में भी अब इस हयातयाती बिजली को Bio-Electricity या Bio-Energy के तौर पर तसलीम किया गया है। यह हयातयाती बॅटरी हमारे जिस्म में उस वक़्त ही वजूद पज़ीर हो जाती है जब हम रेहमे मादर में होते हैं। इस बॅटरी को तबदील नहीं किया जा सकता और इसी में से हिसास बर्क़ी रौ पैदा होती है। इस बॅटरी में से सफेद रौशनी निकलती है जो आँखों को ख़ीरा कर देती है। इसे मुराक़बा या ध्यान में आदमी अपनी पेशानी में बंद आँखों से देख सकता है। बहुत से लोगों ने इस रौशनी का नज़ारा किया है।

इस बॅटरी से ख़ारिज होने वाली बर्क़ी रौ (चेतना) हमारे जिस्म में रवों के ज़रिए बहती रहती है। इस बहाव के मुख़तलिफ रवों को मेरिडियंस (Meridians) कहा जाता है जो दायें हाथ की उँगलियों और अँगुठे की पोर से शुरू हो कर दायें पैर के अँगुठे और उँगलियों की पोरों तक पहुँचती है। इसी तरह बायें हाथ की उँगलियों और अँगुठे की पोर से चलने वाली रौ जिस्म के बायें पैर के अँगुठे और उँगलियों की पोरों तक जाती है। जब तक यह हयातयाती बहाव जारी रहता है जिस्म तन्दुरूस्त रहता है। लेकिन बहुत ज़्यादा काम और मेहनत की वजह से यह बहाव जिस्म के किसी हिस्से तक सही तौर पर नहीं पहुँच पाता लिहाज़ा वह हिस्सा सही तौर पर अपना फेल अंजाम देने से कासिर रहता है और वहाँ दर्द शुरू हो जाता है। अगर बर्क़ी रौ को वहाँ तक पहुँचने की राह हमवार कर दी जाए तो दर्द या मर्ज़ ख़तम हो जाता है।

शमशी तनफ्फुस

शमशी तनफ्फुस का तरीक़ा जिस्म की हरारत बढ़ाने में इसका बड़ा हिस्सा है। बाँया नथना बंद करके सिर्फ दायें नथने के ज़रिए सांस लें और ख़ारिज करें। दाँया नथना चूँके सूरज के साथ मुनसलिक है। लिहाज़ा जिस्म में हरारत बढ़ेगी। यह तरीका सर्दी, दमा, ब्रोंकाइट्स, पोलियो, फॉलिज वग़ैरा में फायदा करता है। खुसुसन बरसात और सरदियों के मौसम में यह तरीकए तनफ्फुस निहायत कारआमद है।

क़मरी तनफ्फुस

क़मरी तनफ्फुस के तरीके से जिस्म में ठंडक होती है। डाँया नथना बंद करके सिर्फ बायें नथने से सांस लें और ख़ारिज करें। बायाँ नथना चाँद से मुताल्लिक है। यह तरीका गरमियों में, बुख़ार और लू लगने और सर दर्द की हालत में निहायत कार आमद है।

शमशी व क़मरी तनफ्फुस में तवाज़न

जिस्म में गरमी व सर्दी को बराबर रखने के लिए सिर्फ दायें नथने से सांस लें और फिर उसे बंद करके सिर्फ बायें नथने से ख़ारिज करें। फिर बायें नथने से सांस लें और दायें से ख़ारिज करें।

जब सांस फेफड़ों में रूकी हुई हो उस वक़्त पेट को अंदर की तरफ खींचने से ज़्यादा बेहतर असरात मुरत्तिब होते हैं। इस से पेट कम होता है सुकड़ता है। जब आप अंदर की तरफ सांस खींचें तो उस वक़्त आप के सीने का फैलाव **2** से **3** इंच बढ़ जाना चाहिए। यह मश्क ज़मीन पर या कुर्सी पर बैठ कर या खड़े खड़े हत्ता के चलते चलते भी की जा सकती है।

दायें या बायें नथने से सांस लेते वक़्त दूसरे नथने को बंद कर दें। बायें करवट सोने से दायाँ नथना चलेगा और इस तरह सूरज की मश्क होगी। इसी लिए बर्रे सग़ीर में लोगों को खाना खाने के बाद **10** से **15** मिनट तक बायें करवट लेटने का मशवरा दिया गया है ताके सूरज की मश्क हो सके। जिस्म में हरारत बढ़े और हाज़मा में आसानी हो। इस तरह बुख़ार में या गरमी के दिनों में दायें करवट सोने से जिस्म में ठंडक बढ़ती है और बुख़ार में अफाक़ा होता है। इस तरह बाक़ायदगी से मश्कें जारी रखी जाएँ तो जिस्म में हर जगह ऑक्सीजन पहुँच जाएगी, खून साफ होगा और बहुत से अमराज़ दूर हो जाएँगे। साफ होने वाला खून जिस्म में मौजूद कार्बन डाई ऑक्साइड और दीगर अलाइशों को निज़ामे तनफ्फुस के ज़रिए ख़ारिज कर देगा जिस के नतीजे में गुर्दो पर काम का दबाव कम होगा और जिल्दी अमराज़ और गुर्दे नाकाम होने के इम्कानात कम हो जाएँगे। ख़ालिस खून जिस्म के हर उज़ू को फआल बनाएगा जिसके नतीजे में कुव्वत और फुर्ती पैदा होगी।

बेटा या बेटी हासिल करने के लिए क्या करें

ऊपर सफहात में शमशी व कमरी कसरतों के तआल्लुक से जो मालूमात दी गई है उसका बाग़ौर मुतालआ करें। मुंदर्जा ज़ेल हिदायत पर अमल करने के बाद यक़ीनी तौर पर बेटा या बेटी का हुसूल मुम्किन है।

क ः बच्चे की पैदाइश कोई हादसाती वाकिया नहीं होना चाहिया बल्के मनसूबे के तहेत होना चाहिए और आज के दौर में मुम्किन है। मग़रीबी मुमालिक के बाशिंदों के तजरूबात से मालूम हुआ है के खाई जाने वाली हमल रोकने की गोलियाँ मुज़ीर असरात की हामिल होती हैं और इसी लिए अब वहाँ इन गोलियों के इस्तेमाल की मुमानत है।

ख ः माँ को चाहिए के वह **3** से **7** दफा अयाम आ जाने के बाद ही हमल इख़्तियार करें। इस तरीके कार पर अमल करने से बच्चा मुकम्मल आज़ा का हामिल और सहत मंद पैदा होगा। इस से वालदैन को लाहक आरिज़ों का ख़ौफ कम से कम होगा।

ग ः जिस दिन माहवारी की इब्तेदा हो उसी को पहला दिन समझें।

घ ः जब तक माहवारी जारी रहे सोहबत ना करें।

बेटी हासिल करने के लिए

ताक के दिनों यानी **5,7,9,11,13** और **15** वें दिन सोहबत की जाए। सोहबत करने से क़ब्ल शौहर को चाहिए के वह बीवी को दायें करवट अपने सामने करके सोए। **15** मिनट के बाद जब शोहर बायें नथने से सांस चलना शुरू हो तब ही इंटर कोर्स करे।

बेटा हासिल करने के लिए

जुफ्त तारीखों में यानी **4,6,8,10,12** या **14** वीं रोज़ शोहर अपनी बायें करवट लेटे और बीवी उसके सामने लेटी हो। **15** मिनट तक लेटे रहने से शोहर अपने दायें नथने से सांस लेने लगेगा उस वक़्त सोहबत करें।

नोट ः सोहबत देर से (यानी **10** वें से **15** वें) दिन की जाए तो हमल रहने के इम्कानात ज़्यादा होते हैं और बच्चा तनदुरूस्त होता है। हमल रह जाने के बाद हामला को चाहिए के वह अपने खाने पीने का ख़याल रखें। हर मौसम के मौजूद फल खाए जाएँ। कुदरती केलशियम के हुसूल के लिए ज़्यादा से ज़्यादा दूध पीये और केले खाए। हमल की सही नशो व नुमा और तनदुरूस्त बच्चा पैदा करने के लिए हामला को चाहिए के वह रोज़ाना हलकी फुलकी वर्ज़िश करे। अगर कुछ और ना हो सके तो कम अज़ कम रोज़ाना दो तीन किलो मीटर चलने का निज़ाम बनाए।

हिदायत ज़रूरी

बच्चे को अख़लाक़ व किरदार की तालीम रहमे मादर में ही मिलती है लिहाज़ा हामला को चाहिए के वह बेसरोपा तशवीश, फिकर व तरद्दुद वग़ैरा से दूर रहे। खुश रहे, मज़हबी,फन्नी और दीगर अदब की किताबों का मुताल्ला करे या सुने। बच्चे को जैसा बनाना चाहती है वैसी ही खुद बनने की कोशिश करे। शौहर पर भी लाज़िम है के ऐसे अनमोल मौके पर नौ माह के दौरान वह बीवी को खुश व खुर्रम रखे, उसकी तमाम सरगर्मियों में दिलचस्पी ले और उसकी हिम्मत अफ्ज़ाई करे।

नसली बीमारी का ख़ातमा

अगर मर्द ने शादी होने तक अपने माद्दाए मनविया की हिफाज़त की हो और औरत को हामला होने से क़ब्ल कम अज़ कम सात दफा माहवारी आ चुकी हो तो आने वाले बच्चे में मौरूसी अमराज़ का इम्कान कम हो जाता है। 12 से 14 साल की उम्र में जिंसी गुदूद मुतहरिक होते हैं जिस से लड़कियों में हैज़ का और लड़कों में माद्दाए मनविया की पुख़्तगी का अमल शुरू हो जाता है। उनकी मिसाल कच्ची ईंट की है। जिसे पायदार होने के लिए गरमी की ज़रूरत होती है। जिस्म में माद्दाए मनविया कहीं भी ज़ख़ीरा नहीं किया जा सकता। वह तो जिस्म की हिफाज़ती ढाल बन जाता है और नाखून में निस्फ चाँद का निशान इस बात की दलील है के माद्दाए मनविया सेहत मंद है। यह कीमती माद्दाए मनविया 24 साल की उम्र तक ज़ाए ना हो और बैज़ा 18 साल की उम्र तक मेहफूज़ रहे तो यही निस्फ चाँद ताक़तवर बन कर ज़िंदगी भर जिस्म की हिफाज़त करता है। हज़म होने वाली अंदाज़न 49 किलो ग़िज़ा में से एक किलो ग्राम खून पैदा होता है और एक किलो ग्राम खून में से माद्दाए मनविया के सिर्फ चंद कतरे बनते हैं। इस सारे अमल में 49 दिन लगते हैं और खून सात मराहल से गुज़र कर माद्दाए मनविया की सूरत इख़्तियार करता है यानी (1) माए (2) खून (3) चर्बी (4) पठ्ठे (5) हड्डी (6) गूदा और (7) माद्दाए मनविया। इस से वाज़ेह होता है के जिस्म के अफ्आल में कहीं भी कोई ख़ामी या रूकावट पैदा हो तो जिस्म में चर्बी जमा होने लगती है। खून या मनी तजरूबागाह में नहीं बनाई जा सकती।

मारिफते जिस्मे इन्सानी

☆ जिस्मे इन्सानी में सफेदी व सुर्ख़ी ☆

साफेदी मर्द के नुतफे का असर है इस से चार चीज़ें बनती हैं।
(1) मनी (2) हड्डियां (3) मग़ज़ (4) रगें

सुर्ख़ी औरत की तरफ से है इस से भी चार चीज़ें बनती हैं।
(1) खून (2) बाल (3) गोश्त (4) पोस्त

जिस्मे इन्सानी में पंद्रह दरवाज़े

जिस्मे इन्सानी में 15 दरवाज़े हैं जिस में से 3 बंद हैं और 9 खुले और 3 पोशीदा हैं। तीन बंद दरवाज़े ः (1) नाफ (2) तालू (3) गुद्दी।
नौ खुले दरवाज़े ः दो कान के, दो नाक के, एक मूहँ का, आँख के दो, एक मक़अद का, एक पेशाब करने का।

जिस्मे औरत में तीन पोशीदा सुराख़

दो पिस्तान के सुराख़ जिस्मे औरत में और एक मुक़ामे मनी। इस तरह जुमला तीन दरवाज़े पोशीदा हैं। जिसकी कुंजी अल्लाह तआला के हाथ में है। वह जब खुलवाना चाहता है तो जिसको अपना फज़्लो करम बख़्शे उस मर्द के ज़रिए एक दरवाज़ा खुलवाता है। लेकिन उसको दाख़िल होने नहीं देता बल्के खुद खुदाए तआला दाख़िले दरवाज़ा हो कर खुद जाता तो यह दोनों दरवाज़े भी खुद खोल देता है वरना नहीं खोल सकते। इस तरह अल्लाह तबारक व तआला हर हर शान से हर एक जुमला पंद्रह दरवाज़ों में खुद ब खुद दाख़िल होता है और खुद ब खुद ख़ारिज भी होता है। इस दाख़िल होने को " कैदे ताय्युन " कहते हैं और ख़ारिज होने को " वजहु अल्लाह " कहते है। इन दरवाज़ों को पैग़मबर और औलिया के सिवा कोई खोल नहीं सकता और कोई दाख़िल नहीं हो सकता जब तक खुदाए तआला उनके साथ ना हो। नाफ के दरवाज़े में मुक़ामे दीद है जो इस में

दाख़िल हुआ फिर निकल ना सका। फिर उसी में महू हो कर रह गया। तालू और गुद्दी के दरवाज़ों में मुक़ामे नज़र व सैर व तैर है।

वजूदे इन्सानी में सात तबक़ ज़मीन व सात तबक़ आसमान

इस वजूद में सात तबक़ ज़मीन के इस तरह से मौजूद है।

(1) बाल (2) खाल (3) खून (4) गोश्त (5) रगें (6) हड्डियाँ (7) मग़ज़।

सात तबक़ आसमान के इस तरह से मौजूद हैं।

(1) सुनना (2) देखना (3) जानना (4) बोलना (5) इरादा करना (6) कुदरत व ताक़त रखना (7) हयात व ज़िंदा पना रखना

जिस्मे इन्सानी आलमे कुब्रा

चाँद आँख की सफेदी का हिस्सा है। सूरज आँख की सयाही का हिस्सा है। अर्श पेशानी है। कुर्सी ठुड्डी है। लोह तालू है कलम जुबान है। नाक पुल सिरात है। आँखें अर्श की कंदील हैं। भवें काबा कौसेन हैं।

☆ **ताय्युन :** इस वजूद का बुर्का इब्लीस है। दिल का बुर्का मोहम्मद हैं। जान का बुर्का खुदाए तआला है। खुदा नफ्सुर्रहमान है। नफ्स उसका सिर्र है। दिल उसका नूर है। रूह उसकी ज़ात है।

☆ **चहारूम वजूद :** एक वाजिबुलवजूद बोलने वाला। दूसरा मुम्किनुलवजूद सुनने वाला। तीसरा मुम्तनुलवजूद देखने वाला। चौथा आरिफुलवजूद बूझने वाला।

☆ **चहार अक़्सामे वजूद ः** (1) नूर का वजूद वासिलों का (2) रूह का वजूद आशिकों का (3) दिल का वजूद पैग़मबरों का (4) इन सब का मजमुआए वजूद हैवान जिस मे हर इन्सान शामिल है। इसका और तमाम हज़दा हज़ार आलम का है।

☆ **पंज अफ्आल ः** ज़ात का फेल नूर, नूर का फेल रूह, रूह का फेल जान, जान का फेल दम, दम का फेल कहना, सुनना, चलना, हिलना, ओढ़ना, पहनना, लेना, देना, खाना, पीना, जीना, मरना है।

☆ **पर्दा ः** ज़ात का पर्दा सिफात, सिफात का पर्दा जिस्म, जिस्म का पर्दा इस्म, इस्म का पर्दा हरकत, (फेल) हर हरकत जो इन्सान करता है यानी खुद फाइल व खुद मफऊल जानना चाहिए के इस तरह हर हरकत और हर फेल और इसकी वाक्फियत। फेले इलाही वाक्फियते इलाही है। हुव्वल अव्वल, हुव्वलआख़िर, हुव्वज़ज़ाहिर, हुव्वल बातिन, यह सब बातें इसी वजूद पर साबित हैं और हर इन्सान अपने फेल से वाक़िफ और जो अपने फेल से वाक़िफ नहीं होता वह यानी अदमे वाक़्फियत फेले शैतानिया है।

☆ **रूहें पाँच क़िस्म की हैं ः** (1) रूहे उलवी (2) रूहे सिफली (3) रूहे मलकी (4) रूहे कुदसी (5) रूहे जारी। ऐतबारात की वजह से रूह की तक़्सीम हुई वरना सब रूहें एक ही हैं। तफसीली तौर पर रूहे जमादी, रूहे नबाती, रूहे हैवानी, रूहे नफसानी, रूहे इन्सानी।

☆ **रूहे इन्सानी तमाम रूहों की मुताबिक़त ः** इनकी मुताविकत जिस्म में इस तरह से है। रूहे जमादी सूरत है, रूहे नबाती दम है, रूहे हैवानी दिल है, रूहे नफसानी अक़ल है।

☆ **मुकामे नाफ़ः** दम हमेशा नाफ का तवाफ करता है, इस दम को नाफ से खींच कर ख़याल के ज़रिए दिमाग़ में पहुँचा कर और भी कुछ काम करते हैं (जिसको सालिक राहे हक़ खूब जानते हैं) पस जो कुछ करने का इरादा करते हैं वह " ﷺ " के साथ हो जाता है। मौत का मुकाम नाफ में है।

☆ **दो शह रगः** दो शह रगों के दरमियान में एक " नूर की लौ " होती है जो दम के निकलते ही बदन से ग़ायब हो जाती है। वह नूर ज़ात का होता है। अगरचा के यह " नूर की लौ " सरापा है और मख़्फी है लेकिन अहलुल्लाह और आरिफ को आलमे नासूत से आलमे मलकूत तक दिखाई देती है और उसी की रौशनी में एक मुक़ाम से दूसरे मुकाम की सैर होती है।

☆ **मारफतः** दम आदम है। रूह हव्वा है। रूह व दम दोनों हर दम आपस में मिलते हैं उसका नाम वस्ले दवाम है। तन में दम है। दम में दिल है। दिल में रूह है। रूह में नूर है। नूर में ज़हूर है। ज़हूर में इश्क है। इश्क में ज़ात है। ज़ात को जुम्बिश हुई तो इश्क हिला। इश्क हिला तो ज़हूर। झहूर हिला तो नूर। नूर हिला तो रूह। रूह हिली तो दम। दम हिला तो दिल। दिल हिला तो तन हिला। इस जुम्बिश की वजह से हर फेल फेले ज़ात है। अगर फकीर किसी के फेल को बुरा माना तो फकीर नहीं है। मुद्दई है।